सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 02, अंक 186, नई दिल्ली । रविवार, 15 सितम्बर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 *सीएम केजरीवाल ने सपत्नी बजरंग बली का दर्शन कर लिया
06 कृषि निर्यात बढ़ाने का मार्ग
08 अमित शाह बोले- बनेगा दुनिया का सबसे बड़ा शब्दकोष

सैटेलाइट आधारित टोल सिस्टम चरणबद्ध तरीके से होगा लागू, जानें कैसे कटेगा वाहन का टोल टैक्स

सरकार अगले सप्ताह वाहनों में ऑन-बोर्ड यूनिट (OBU) लगाकर ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम (GNSS) पर आधारित टोल कलेक्शन शुरू करने जा रही है। जानें सैटेलाइट से कैसे कटेगा टोल टैक्स।

संजय बाटला

नई दिल्ली। एक बार जब यह नई प्रणाली सभी राजमार्गों पर पूरी तरह से चालू हो जाएगी, तो इससे भौतिक टोल प्लाजा या टोल गेट पर बिना रुके यात्रा करना संभव हो जाएगा। पूरी तरह से लागू होने में कुछ साल लगेंगे, लेकिन यह प्रणाली बेहतर हाईवे ड्राइविंग एक्सपीरियंस सुनिश्चित करती है। आइए जानें कि यह कैसे काम करेगी।

सैटेलाइट द्वारा ट्रैक की जाने वाली दूरी

इस नई प्रणाली का सबसे खास बात यह है कि यह उपग्रह (सैटेलाइट) या उपग्रहों का समूह वाहनों की आवाजाही को ट्रैक करेगा और यात्रा की गई सटीक दूरी के आधार पर टोल या उपयोगकर्ता शुल्क की गणना करेगा।

इसका मतलब है कि वाहनों को टोल बूथ पर इलेक्ट्रॉनिक रूप से टोल काटने के लिए रुकना नहीं पड़ेगा, जैसा कि मौजूदा फास्टैग प्रणाली में होता है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने इस सप्ताह की शुरुआत में GNSS-OBU प्रणाली का इस्तेमाल करके टोल कलेक्शन की अनुमति देने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग शुल्क नियमों में संशोधन किया। अधिकारियों ने कहा कि टोल प्रणाली भारत की उपग्रह-आधारित नेविगेशन प्रणाली NavIC का इस्तेमाल करेगी।

पहले से इंस्टॉल किए गए उपकरणों का इस्तेमाल किया जाएगा

हर वाहन में एक गैर-हस्तांतरणीय GNSS-OBU यूनिट लगाई जाएगी। यह यूनिट एक ट्रैकिंग डिवाइस के रूप में काम करेगी। और इसे या तो बाहरी रूप से (रेट्रोफिटेड) लगाया जा सकता है या फैक्ट्री से लगी लगाई ली जा सकता है।

यह यूनिट 'केंद्रीकृत/क्षेत्रीय टोल चार्जर' सॉफ्टवेयर के साथ डिजिटल रूप से कम्युनिकेट (संचार) करेगी, जिसे निर्दिष्ट हाईवे खंडों पर स्थापित किया जाएगा। 'टोल चार्जर' वाहनों में लगे OBU से यात्रा की गई दूरी और समय के बारे में इनपुट हासिल करेगा। OBU को फिनटेक कंपनियों द्वारा टोल चार्जर से जोड़ा जाएगा, जो रजारीकर्ता इकाई के रूप में काम करेगा। ठीक उसी तरह जैसे FASTag सिस्टम के तहत जारीकर्ता बैंक होते हैं।

वर्चुअल टोल बूथ

हाईवे पर वाहनों के प्रवेश और निकास की ट्रैकिंग वर्चुअल गैंट्री (एक तरह का सिग्नल इंफ्रास्ट्रक्चर) का इस्तेमाल करके की जाएगी। जिसे टोल वाले हाईवे नेटवर्क के साथ स्थापित किया जाएगा। यह सिस्टम GNSS के जरिए वाहनों से संवाद करेगा। वे एक वर्चुअल टोल बूथ के रूप में काम करेंगे जो वाहन पंजीकरण संख्या, उसकी टाइप और बैंक खाते के डिटेल्स जैसी जानकारी इकट्ठा करेंगे।

जब GNSS-OBU वाहन वर्चुअल टोल बूथ से गुजरता है, तो सिस्टम मौजूदा FASTag इकोसिस्टम का इस्तेमाल करके यात्री के खाते से उपयोगकर्ता शुल्क को ऑटोमैटिक तरीके से काट लेगा।

जब भी कोई वाहन टोल प्लाजा की निर्धारित लंबाई को पार करेगा, यू-टर्न लेगा और GNSS स्ट्रेच को छोड़ेगा, तो उपयोगकर्ता शुल्क की रियल-टाइम में गणना की जाएगी। हर टोल कटौती पर उपयोगकर्ता को एक एसएमएस भेजा जाएगा। 'टोल चार्जर' NHAI (एनएचएआई) द्वारा परिभाषित टोल मापदंडों जैसे कि संरचना के प्रकार, यानी बाईपास, एक्सप्रेसवे या फ्लाईओवर आदि के आधार पर उपयोगकर्ता शुल्क की गणना करेगा।

डेडिकेटेड लेन

शुरुआत में, मौजूदा टोल प्लाजा में डेडिकेटेड GNSS लेन होंगी, जिनमें आमतौर पर खुले गेट होंगे। ताकि GNSS-OBU लगे वाहनों को बिना रुके गुजरने दिया जा सके। इन लेन में ऐसे वाहनों को ट्रैक करने की एडवांस्ड टेक्नोलॉजी होगी, जिससे उन्हें बिना रुके गुजरने की अनुमति मिलेगी। धीरे-धीरे, इस प्रणाली के तहत और ज्यादा लेन लाई जाएंगी।

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण अगले दो महीनों में बोली दस्तावेज जारी करेगा। इसका लक्ष्य अप्रैल-जून 2025 तक वाणिज्यिक उपग्रह-आधारित टोलिंग के तहत पहला खंड चालू करना है।

TCS, Infosys, Accenture, RailTel, TCIL, Sky Toll, Kapsch, BEMobile और Movyon सहित भारतीय और वैश्विक प्रौद्योगिकी प्रमुखों ने GNSS-आधारित टोलिंग के लिए प्रणाली विकसित करने में दिलचस्पी जताई है और आवेदन दिए हैं।

ट्रकों से होगी शुरुआत

GNSS-आधारित टोलिंग सिस्टम ट्रकों, बसों और खतरनाक सामान ले जाने वाले वाहनों से शुरू होगा। क्योंकि इनमें पहले से ही वाहन स्थान ट्रैकिंग (VLT) सिस्टम है और इसमें गोपनीयता के मुद्दे शामिल नहीं हैं।

नई प्रणाली में शामिल अगला खंड अन्य वाणिज्यिक वाहन होंगे। 2026-27 में आखिरी चरण के हिस्से के रूप में निजी वाहनों को GNSS ट्रैकिंग के तहत लाया जाएगा।

जियो-फेंसिंग का काम पूरा

राष्ट्रीय राजमार्ग की लगभग पूरी लंबाई की जियो-फेंसिंग पूरी हो चुकी है। टोल गणना के लिए सटीक प्रवेश और निकास बिंदुओं को चिह्नित करने के लिए जियो-फेंसिंग महत्वपूर्ण है।

GNSS टोलिंग एजेंसी जीएनएसएस-आधारित टोलिंग शुरू करने से पहले राजमार्गों की जियो-रेफरेंसिंग करेगी।

टोल कलेक्शन का लक्ष्य

भारत में लगभग 1.4 लाख किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्ग की लंबाई है, जिसमें से लगभग 45,000 किलोमीटर पर उपयोगकर्ता शुल्क वसूला जाता है।

शुरुआत में, जून 2025 तक 2,000 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्गों पर जीएनएसएस-आधारित टोलिंग शुरू की जाएगी। इसे नौ महीनों में 10,000 किलोमीटर, 15 महीनों में 25,000 किलोमीटर और दो साल में 50,000 किलोमीटर तक बढ़ाया जाएगा।

ट्रेनों और रेलवे स्टेशनों पर अब नहीं रहेगी गंदगी, चलेगा विशेष सफाई अभियान

हर साल 2 अक्तूबर को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती मनाई जाती है। इसी को देखते हर साल रेलवे भी स्वच्छता ही सेवा अभियान चलाता है। इस बार भी विशेष अभियान चलाया जाएगा। जिसके तहत ट्रेनों और रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों को गंदगी नहीं मिलेगी। यह अभियान शनिवार से ही शुरू किया जाएगा। पढ़िए इस बार की स्वच्छता की क्या है थीम।

नई दिल्ली। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर प्रत्येक वर्ष रेलवे स्वच्छता ही सेवा अभियान चलाता है। इस बार यह विशेष स्वच्छता अभियान 14 सितंबर से शुरू होकर एक अक्टूबर तक चलेगा। स्वच्छता ही सेवा अभियान का इस बार का थीम स्वभाव स्वच्छता- संस्कार स्वच्छता रखा गया है। दो अक्टूबर को गांधी जयंती 'स्वच्छ भारत दिवस' के रूप में मनाया जाएगा।

'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के अंतर्गत उत्तर रेलवे के मंडलों, कारखानों, एवं अन्य इकाइयों में कई गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। रेलवे स्टेशनों, कार्यालयों, रेलवे कालोनियों, स्वास्थ्य इकाइयों एवं रेलवे ट्रैक में श्रमदान के माध्यम से गहन स्वच्छता अभियान चलाया जायेगा।

गांवों में लगाई जाएगी स्वच्छता चौपाल

रेलवे स्टेशनों के आसपास स्थित गांवों में स्वच्छता चौपाल लगाई जाएगी, जिसके द्वारा गांववासियों को ट्रेनों, रेलवे स्टेशनों और रेल परिसर में स्वच्छता बनाए रखने के लिए जागरूक किया जाएगा। इस स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत

सफाई कर्मचारियों और उनके परिवारों के हित के लिए स्वास्थ्य जांच शिविरों का आयोजन किया जाएगा।

मैराथन, साइक्लोथन, खेल प्रतियोगिताओं तथा वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया जाएगा। रिड्यूस, रियूज, रिसाइकल गतिविधियों व कचरे से कलाकृति बनाने तथा रिसाइकल्ड उत्पादों की बिक्री पर विशेष बल दिया जाएगा। स्टेशनों पर सेल्फी पाइंट स्थापित किए जाएंगे।

यात्रियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता के प्रति किया जाएगा जागरूक

स्वच्छता प्रतिज्ञा, नुक्कड़ नाटक के आयोजन से यात्रियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जाएगा। रेलवे स्टेशनों तथा अन्य रेलवे परिसर पर शून्य अपशिष्ट पहल जैसी घटनाओं को डिजिटल प्लेटफार्म के माध्यम से हाइलाइट और साझा किया जाएगा।

युवाओ में जागरूकता फैलाने के लिए कविता, निबंध, पेंटिंग और पोस्टर प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। शैक्षणिक संस्थान/स्कूल/आंगनवाड़ी केंद्र, इत्यादि में नारा लेखन, प्रश्नोत्तरी और जिंगल प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

वोकल फॉर लोकल सेफ्टी: आपकी भागीदारी से ही बदलाव संभव

डॉ. अंकुर शरण

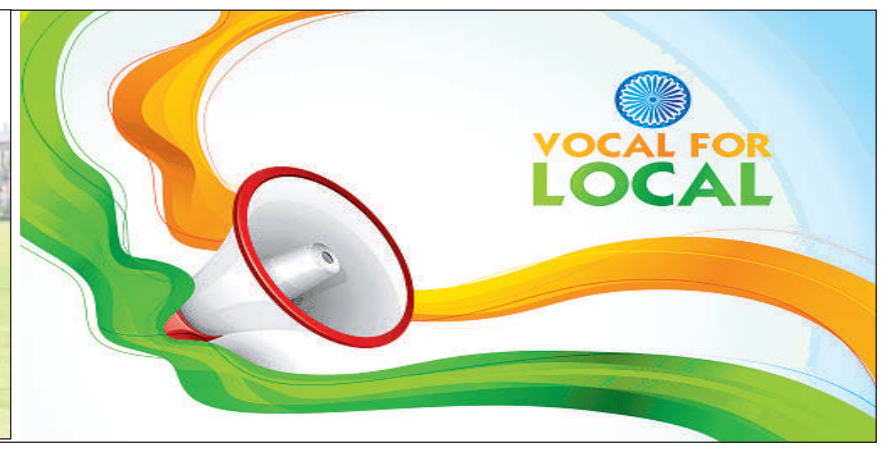

आपका शहर डूब रहा है, और केवल शहर ही नहीं, हमारे पैसे और संसाधन भी पानी में बह रहे हैं। यह सिर्फ जलभराव की समस्या नहीं है, बल्कि हमारी सामूहिक जिम्मेदारी का सवाल भी है। अगर हम हर दिन नहीं तो हफ्ते में कम से कम एक घंटा अपने शहर, समाज और सड़कों की सुरक्षा के लिए दें, तो न केवल हमें बदलाव दिखाई देगा बल्कि हमारे आसपास का माहौल भी बेहतर होगा।

हम अपने शहरों में नई रेल लाइनें और बड़े बाजार बनाने पर जोर देते हैं, लेकिन अपने आस-पड़ोस की सफाई, सड़क सुरक्षा और पार्कों के रखरखाव पर ध्यान नहीं देते। यदि हमारे युवा जितनी मेहनत जिम में करते हैं, उतनी मेहनत अपने समाज के पार्कों में लगाएं, तो वे भी सुंदर हो सकते हैं। हमारे पार्क और सार्वजनिक स्थान केवल इसलिए खराब हो रहे हैं क्योंकि अच्छे लोगों ने बोलना बंद कर दिया है, और कुछ गलत लोग अपनी मनमानी करने लगे हैं।

यहां बात बहस या लड़ाई-झगड़े की नहीं है, बल्कि सही समय पर सही बात कहने की है। यदि आपके सामने, आपकी सोसाइटी या शहर में कुछ गलत घट रहा है, तो यह केवल शासन-प्रशासन का काम नहीं है। हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझे और कुछ समय सामाजिक सेवा में अवश्य निकाले।

इससे न केवल आपके शहर और समाज में सुधार होगा, बल्कि आपको आत्मसंतुष्टि भी मिलेगी। जब आप अपने आस-पड़ोस की सफाई और सुरक्षा के लिए काम करते हैं, तो आप अन्य लोगों के लिए एक प्रेरणा स्रोत भी बनते हैं। आप जो बदलाव लाते हैं, वह न केवल आपकी पीढ़ी के लिए बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी महत्वपूर्ण होगा।

इसलिए, 'वोकल फॉर लोकल सेफ्टी' का समर्थन करें। अपने शहर की सुरक्षा, सफाई और सुन्दरता को बनाए रखने में हिस्सा लें। जब हर नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन करेगा, तभी एक सशक्त, सुरक्षित और स्वच्छ समाज का निर्माण संभव हो सकेगा।

आज से शुरुआत करें: आवाज उठाएं, कदम बढ़ाएं

अगर आपके आसपास कुछ गलत हो रहा है, तो चुप बैठने से कुछ नहीं बदलेगा। आवाज उठाएं, सोशल मीडिया पर लिखें, ट्वीट करें संबंधित अधिकारियों को, और तब तक फॉलो अप करते रहें जब तक आपको सही जवाब और कार्रवाई न मिले। यह जरूरी है कि हम सिर्फ आलोचना न करें, बल्कि जब कुछ अच्छा हो रहा हो, तो उसे सराहें और दूसरों को भी प्रोत्साहित करें।

राजनीतिक ज्ञान की बातें छोड़ें और उस ज्ञान का उपयोग करें जो आपके पास है। सोचें कि आप अपने शहर और समाज के लिए क्या कर सकते हैं, और फिर उसे करने में जुट जाएं। जो संसाधन आपके पास उपलब्ध हैं, उन्हीं से शुरुआत करें। कल का किसे पता? जो आज आपके पास है, वही सबसे बड़ा साधन है।

बैठकर केवल देखने से कुछ नहीं होता, आपको उठकर कुछ करना होगा। और अगर आप असफल होते हैं, तो अपने तरीकों को बदलें, लेकिन हिम्मत कभी मत हारें। जैसे पेड़ों पर पत्ते बदलते हैं, लेकिन जड़ें और शाखाएं हमेशा मजबूती से खड़ी रहती हैं। हमें भी अपनी जड़ों और इरादों को मजबूत रखना है, चाहे रास्ते कितने भी कठिन क्यों न हों।

तो आइए, आज से ही शुरुआत करें। सिर्फ देखने और आलोचना करने के बजाय, कुछ करके दिखाएं। आपके छोटे-छोटे प्रयास ही बड़े बदलाव की नींव रख सकते हैं।

आइए, मिलकर इस बदलाव की शुरुआत करें।

भगवान विष्णु का महत्वपूर्ण अवतार है वामन

वामन जयंती भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को मनाई जाती है। जबकि सनातन धर्म के अनुसार चैत्र माह में शुक्ल पक्ष की द्वादशी को वामन द्वादशी मनाई जाती है। द्वादशी तिथि के दिन मनाए जाने के कारण ही इसे वामन द्वादशी भी कहा जाता है। धर्म ग्रंथों के अनुसार इसी शुभ तिथि को श्रवण नक्षत्र के अभिजित मुहूर्त में भगवान श्रीविष्णु के एक रूप भगवान वामन का अवतार हुआ था'

वामन जयंती कथा

वामन अवतार भगवान विष्णु का महत्त्वपूर्ण अवतार माना जाता है। भगवान की लीला अनंत है और उसी में से एक वामन अवतार है। वामन अवतार की कथानुसार देव और दैत्यों के युद्ध में दैत्य पराजित होने लगे थे। पराजित दैत्य मृत एवं आहतों को लेकर अस्ताचल चले जाते हैं और दूसरी ओर दैत्यराज बलि इंद्र के वज्र से मृत हो जाते हैं। तब दैत्यगुरु शुक्राचार्य अपनी मृत संजीवनी विद्या से बलि और दूसरे दैत्यों को भी जीवित एवं स्वस्थ कर देते हैं। राजा बलि के लिए शुक्राचार्य एक यज्ञ का आयोजन करते हैं तथा अग्नि से दिव्य रथ, बाण, अभेद्य कवच पाते हैं। इससे असुरों की शक्ति में वृद्धि हो जाती है और असुर सेना अमरावती पर आक्रमण कर देती है।

विष्णु का वामन अवतार

देवताओं के राजा इंद्र को दैत्यराज बलि की इच्छा का ज्ञान होता है कि बलि सौ यज्ञ पूरे करने के बाद स्वर्ग को प्राप्त करने में सक्षम हो जाएगा। तब इंद्र भगवान विष्णु की शरण में जाते हैं। भगवान विष्णु उनकी सहायता करने का आश्वासन देते हैं और वामन रूप में माता अदिति के गर्भ से उत्पन्न होने का वचन देते हैं। दैत्यराज बलि द्वारा देवों के पराभव के बाद ऋषि कश्यप के कहने से माता अदिति पयोव्रत का अनुष्ठान करती हैं, जो पुत्र प्राप्ति के लिए किया जाता है। तब विष्णु भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की द्वादशी के दिन माता अदिति के गर्भ से प्रकट हो अवतार लेते हैं तथा ब्रह्मचारी ब्राह्मण का रूप धारण करते हैं।

महर्षि कश्यप ऋषियों के साथ उनका उपनयन संस्कार करते हैं। वामन बटुक को महर्षि पुलह ने यज्ञोपवीत, अगस्त्य ने मृगचर्म, मरीचि ने पलाश का दण्ड, आंगिरस ने वस्त्र, सूर्य ने छत्र, भृगु ने खड़ाऊं, गुरु देव जनेऊ तथा कमण्डल, अदिति ने कोपीन, सरस्वती ने रुद्राक्ष की माला तथा कुबेर ने भिक्षा पात्र प्रदान किए। तत्पश्चात भगवान वामन पिता से आज्ञा लेकर बलि के पास जाते हैं। उस समय राजा बलि नर्मदा के उत्तर-तट पर अन्तिम यज्ञ कर रहे होते हैं। इस तरह भगवान वामन अपने शरीर पर जो कुछ भी धारण करते हैं, वे सभी वस्तुएं भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं ने उन्हें प्रदान की थी।

बलि ने किया भूमिदान

वामन अवतारी श्रीहरि, राजा बलि के यहां भिक्षा मांगने पहुंच जाते हैं। ब्राह्मण बने विष्णु भिक्षा में तीन पग भूमि मांगते हैं। राजा बलि दैत्यगुरु शुक्राचार्य के मना करने पर भी अपने वचन पर अडिग रहते हुए, विष्णु को तीन पग भूमि दान में देने का वचन कर देते हैं। वामन रूप में भगवान एक पग में स्वर्गादि उर्ध्व लोकों को और दूसरे पग में पृथ्वी को नाप लेते हैं। अब तीसरा पग रखने को कोई स्थान नहीं रह जाता। ऐसे में राजा बलि यदि अपना वचन नहीं निभाए तो अधर्म होगा। आखिरकार बलि अपना सिर भगवान के आगे कर देता है और कहता है तीसरा पग आप मेरे सिर पर रख दीजिए। वामन भगवान ठीक वैसा ही करते हैं और बलि को पाताल लोक में रहने का आदेश करते हैं।

बलि के द्वारा वचन पालन करने पर भगवान विष्णु अत्यंत प्रसन्न होते हैं और दैत्यराज बलि को वर मांगने को कहते हैं। इसके बदले में बलि रात-दिन भगवान को अपने सामने रहने का वचन मांग लेता है। वामनावतार के रूप में विष्णु ने बलि को यह पाठ दिया कि दंभ तथा अहंकार से जीवन में कुछ हासिल नहीं होता है और यह भी कि धन-सम्पदा क्षणभंगुर होती है। ऐसा माना जाता है कि विष्णु के दिए वरदान के कारण प्रति वर्ष बलि धरती पर अवतरित होते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि उनकी प्रजा खुशहाल है। अध्यात्म रामायण के अनुसार राजा बलि भगवान वामन के सुतल लोक में द्वारपाल बन गए और सदैव बने रहेंगे। तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस में भी इसका ऐसा ही उल्लेख है।

देशभर में वामन जयंती पर जगह-जगह धार्मिक आयोजन होते हैं। लोग इनकी जयंती को पूरी भावना भक्ति से मनाते हैं। देश भर में भगवान वामन रूप के अनेक मंदिर भी हैं। भगवान के इस रूप के प्रति लोगों की आस्था देखते ही बनती है। राजा बलि के प्रति भी लोगों की आस्था है। वास्तव में उन जैसा दृढ़प्रतिज्ञ राजा विरला ही होता है। वह जब भूमिदान के संकल्प को ले लेते हैं, तो दैत्य गुरु शुक्राचार्य के मना करने के बावजूद पीछे नहीं हटते। शुक्राचार्य को आभास हो गया था कि राजा बलि के लिए संकट आ गया है, पर वह अपने वचन से नहीं हटते क्योंकि वह प्रतिज्ञा कर चुके थे।

पूजन विधि : इस दिन प्रातःकाल भक्तों को श्रीहरि का स्मरण करके नियमानुसार विधि विधान के साथ पूजा कर्म करना चाहिए। भगवान वामन को पंचोपचार अथवा षोडषोपचार पूजन करने के पश्चात चावल, दही इत्यादि वस्तुओं का दान करना उत्तम माना गया है। संध्या के समय व्रती को भगवान वामन का पूजन करना चाहिए और व्रत कथा सुननी चाहिए तथा समस्त परिवार वालों को भगवान का प्रसाद ग्रहण करना चाहिए। इस दिन व्रत एवं पूजन करने से भगवान वामन प्रसन्न होते हैं और भक्तों की समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं।

वामन भगवान की आरती

ओउम जय वामन देवा, हरि ओउम जय वामन देवा।
बलि रजा के द्वारे'2, संत करे सेवा॥
वामन रूप अनुपम, छत्र दंड शोभा'2।
तिलक भालकी मनोहर भक्तन मन मोहा॥
आगम निगम पुराण बतावे, मुख मंडल शोभा'2।
करनन कुंडल भूषण, पार पड़े सेवा॥
परम कृपाला जाके, भूमी तीन पड़ा'2।
तीन पाव है कोई, बलि अभिमान खड़ा॥
प्रथम पाद रखे ब्रह्मा, लोक में दुजो धार धरा'2।
तृतीय पाद मस्तक पे, बलि अभिमान खड़ा॥
रूप त्रिविक्रम हरे, जो सुखमे गावे'2।
सुख सम्पती नाना विध, हरि जीसे पावे॥

जीवन में खेल की भावना

श्रीश्री रवि शंकर

उदाहरण के लिए, अगर कोई हारने के बारे में बहुत चिंतित और बेचैन है, तो खेल में कोई मजा नहीं आता और खेल का उत्साह खत्म हो जाता है। हमें पूरी प्रतिस्पर्धात्मक भावना के साथ अपना सौ प्रतिशत देते हुए खेलना चाहिए, लेकिन खेल को खेलकूद के साथ ही खेलना चाहिए। भावना यह होनी चाहिए कि आप आगे बढ़ते रहें, खेलते रहें'

आज की दुनिया में, युद्धों को अकसर खेल की तरह माना जाता है और खेल को अकसर युद्ध की तीव्रता के साथ देखा जाता है। हालांकि मैं युद्धों के पक्ष में नहीं हूं, लेकिन मैं खेलों के मूल्यों और जीवन में उनके अनुप्रयोग का पूरे दिल से समर्थन करता हूं। अगर कोई हमेशा जीतता रहे, तो खेल में कोई मजा नहीं रह जाता। यह बहुत उबाऊ और नीरस हो जाता है। उदाहरण के लिए जब आप बच्चों या कमजोर प्रतिद्वंद्वी के साथ कोई खेल खेलते हैं और जीत जाते हैं, तो इसमें कोई आकर्षण नहीं रह जाता।

इसके विपरीत, जब हारने की संभावना होती है और प्रतिस्पर्धा कड़ी होती है, तो खेल ज्यादा दिलचस्प हो जाता है, ज्यादा मूल्यवान हो जाता है और ज्यादा मजेदार हो जाता है। हालांकि, हमें किसी भी खेल के एक और पहलू को हमेशा याद रखना चाहिए, चाहे प्रतिद्वंद्वी कितना भी कठिन क्यों न हो, हमें खेल-कूद की भावना विकसित करनी चाहिए।

उदाहरण के लिए, अगर कोई हारने के बारे में बहुत चिंतित और बेचैन है, तो खेल में कोई मजा नहीं आता और खेल का उत्साह खत्म हो जाता है। हमें पूरी प्रतिस्पर्धात्मक भावना के साथ अपना सौ प्रतिशत देते हुए खेलना चाहिए, लेकिन खेल को खेलकूद के साथ ही खेलना चाहिए। भावना यह होनी चाहिए कि आप आगे बढ़ते रहें, खेलते रहें। किसी को इस बात की परवाह नहीं करनी चाहिए कि वह एक बार, दस बार या फिर 100 बार हार जाए। पासा पलटते रहना चाहिए। यहीं पर समझदारी है। परिणाम अंतिम लक्ष्य नहीं, बल्कि यात्रा है। खेलते समय आपको जो मजा आता है, रास्ते में मिलने वाला प्रोत्साहन और उत्साह, प्रयास और खेल के प्रति प्यार, ये वो चीजें हैं जो मायने रखती हैं। आपको खेल का आनंद लेना चाहिए और खुश रहना चाहिए। अन्यथा खेल की दुनिया में सभी प्रतिस्पर्धाओं के साथ, कोई बहुत आसानी से तनावग्रस्त हो जाता है और खेल अपना अर्थ खो देता है। आज हमारे युवा बहुत ज्यादा मानसिक तनाव में हैं।

वे अपने जीवन में बहुत सी समस्याओं से जूझ रहे हैं। एक बार हमने दिव्यांग खिलाडियों के लिए व्हील चेयर क्रिकेट टूर्नामेंट आयोजित किया था। उनमें बहुत उम्मीद और लचीलापन था और अपने खेल के जरिए उन्होंने खेलों का असली सार व्यक्त किया। आज, हर 40 सेकंड में एक व्यक्ति अपनी जान ले लेता है। उन खिलाडियों ने उन्हें उम्मीद दी। विचार स्पष्ट था, चाहे कुछ भी हो जाए, आपको जीवन में खेलकूद के प्रति समर्पित रहना चाहिए।

मेरा किसी को मजबूत बनने के लिए कहना एक बात है, लेकिन उनके जीवन और खेल ने संदेश बहुत स्पष्ट रूप से दिया। खेल आत्मविश्वास, खुशी, एकता, हंसी और उम्मीद के बारे में है। हमें हमेशा अपने जीवन का सम्मान करना चाहिए और जीवन में खेल भावना से भरपूर रहना चाहिए।

अनंत चतुर्दशी पर करें विष्णु की पूजा

अनंत चतुर्दशी का व्रत भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को किया जाता है। इस व्रत में अनंत के रूप में भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा होती है। अनंत चतुर्दशी के दिन पुरुष दाहिने हाथ में तथा नारियां बाएं हाथ में अनंत धारण करती हैं। अनंत कपास या रेशम के धागे से बने होते हैं, जो कुमकुमी रंग में रंगे जाते हैं तथा इनमें चौदह गांठें होती हैं। इन्हीं धागों से अनंत का निर्माण होता है। यह व्यक्तिगत पूजा है, इसका कोई सामाजिक या धार्मिक उत्सव नहीं होता। अग्नि पुराण में इसका विवरण है। चतुर्दशी को दर्भ से बनी श्रीहरि की प्रतिमा, जो कलश के जल में रखी होती है, की पूजा होती है। व्रती को धान के एक प्रस्थ (प्रसर), आटे से रोटियां (पूड़ी) बनानी होती हैं, जिनकी आधी वह ब्राह्मण को दे देता है और शेष अर्धांश स्वयं प्रयोग में लाता है'

पौराणिक उल्लेख

अनंत चतुर्दशी का व्रत नदी-तट पर किया जाना चाहिए और वहां हरि की कथाएं सुननी चाहिए। हरि से इस प्रकार की प्रार्थना की जाती है, 'हे वासुदेव, इस अनंत संसार रूपी महासमुद्र में डूबे हुए लोगों की रक्षा करो तथा उन्हें अनंत के रूप का ध्यान करने में संलग्न करो, अनंत रूप वाले तुम्हें नमस्कार।' इस मंत्र से हरि की पूजा करके तथा अपने हाथ के ऊपरी भाग में या गले में धागा बांधकर या लटका कर, व्रती अनंत व्रत करता है तथा प्रसन्न होता है। यदि हरि अनंत हैं तो 14 गांठें हरि द्वारा उत्पन्न 14 लोकों की द्योतक हैं। हेमाद्रि में अनंत व्रत का विवरण विशद रूप से आया है। उसमें भगवान श्रीकृष्ण द्वारा युधिष्ठिर से कही गयी कौण्डिन्य एवं उसकी स्त्री शीला की गाथा भी आयी है।

कृष्ण का कथन है कि अनंत उनके रूपों का एक रूप है और वे काल हैं, जिसे अनंत कहा जाता है। अनंत व्रत चंदन, धूप, पुष्प, नैवेद्य के उपचारों के साथ किया जाता है। ऐसा आया है कि यदि यह व्रत 14 वर्षों तक किया जाए तो व्रती विष्णु लोक की प्राप्ति कर सकता है। इस व्रत के उपयुक्त एवं तिथि के विषय में कई मत प्रकाशित हो गए हैं।

माधव के अनुसार इस व्रत में मध्याह्न कर्मकाल नहीं है, किन्तु वह तिथि, जो सूर्योदय के समय तीन मुहूर्तों तक अवस्थित रहती है, अनंत व्रत के लिए सर्वोत्तम है। किन्तु निर्णयसिंधु ने इस मत का खंडन किया है। आजकल अनंत चतुर्दशी व्रत किया तो जाता है, किन्तु व्रतियों की संख्या धीरे-धीरे कम होती जा रही है।

व्रत विधि

इस दिन भगवान विष्णु की कथा होती है। इसमें उदय तिथि ली जाती है। पूर्णिमा का सहयोग होने से इसका बल बढ़ जाता है। यदि मध्याह्न तक चतुर्दशी हो तो ज्यादा अच्छा है। इस व्रत के नाम से लक्षित होता है कि यह दिन उस अंत न होने वाले सृष्टि के कर्ता निर्गुण ब्रह्मा की भक्ति का दिन है।

श्रद्धा से किया गया कर्म ही श्राद्ध है

श्राद्ध पूर्वजों के प्रति सच्ची श्रद्धा का प्रतीक है। पितरों के निमित्त विधिपूर्वक जो कर्म श्रद्धा से किया जाता है, उसी को श्राद्ध कहते हैं। ब्रह्म पुराण के अनुसार श्राद्ध की परिभाषा है, जो कुछ उचित काल, पात्र एवं स्थान के अनुसार उचित (शास्त्रानुमोदित) विधि द्वारा पितरों को लक्ष्य करके श्रद्धापूर्वक ब्राह्मणों को दिया जाता है, श्राद्ध कहलाता है। हिंदू धर्म के अनुसार, प्रत्येक शुभ कार्य के प्रारंभ में माता-पिता, पूर्वजों को नमस्कार या प्रणाम करना हमारा कत्र्तव्य है, हमारे पूर्वजों की वंश परंपरा के कारण ही हम आज यह जीवन देख रहे हैं, इस जीवन का आनंद प्राप्त कर रहे हैं। इस धर्म में, ऋषियों ने वर्ष में एक पक्ष को पितृपक्ष का नाम दिया, जिस पक्ष में हम अपने पितरेश्वरों का श्राद्ध, तर्पण, मुक्ति हेतु विशेष क्रिया संपन्न कर उन्हें अघ्य समर्पित करते हैं। यदि किसी कारण से उनकी आत्मा को मुक्ति प्रदान नहीं हुई है तो हम उनकी शांति के लिए विशिष्ट कर्म करते हैं, जिसे श्राद्ध कहते हैं'

पितृ का अर्थ

पितृ का अर्थ है पिता, किंतु पितर शब्द जो दो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है : व्यक्ति के आगे के तीन मृत पूर्वज, मानव जाति के प्रारंभ या प्राचीन पूर्वज जो एक पृथक लोक के अधिवासी के रूप में कल्पित हैं।

तर्पण

आवाहन, पूजन, नमस्कार के उपरांत तर्पण किया जाता है। जल में दूध, जौ, चावल, चंदन डाल कर तर्पण कार्य में प्रयुक्त करते हैं। मिल सके तो गंगा जल भी डाल देना चाहिए। तृप्ति के लिए तर्पण किया जाता है। स्वर्गस्थ आत्माओं की तृप्ति किसी पदार्थ से, खाने-पहनने आदि

की वस्तु से नहीं होती, क्योंकि स्थूल शरीर के लिए ही भौतिक उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। मरने के बाद स्थूल शरीर समाप्त होकर, केवल सूक्ष्म शरीर ही रह जाता है। सूक्ष्म शरीर को भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी आदि की आवश्यकता नहीं रहती, उसकी तृप्ति का विषय कोई खाद्य पदार्थ या हाड़-मांस वाले शरीर के लिए उपयुक्त उपकरण नहीं हो सकते। सूक्ष्म शरीर में विचारणा, चेतना और भावना की प्रधानता रहती है, इसलिए उसमें उत्कृष्ट भावनाओं से बना अंतःकरण या वातावरण ही शांतिदायक होता है।

पिंड का अर्थ

श्राद्ध-कर्म में पके हुए चावल, दूध और तिल को मिश्रित करके पिंड बनाते हैं, उसे सपिंडीकरण कहते हैं। पिंड का अर्थ है शरीर। यह एक पारंपरिक विश्वास है, जिसे विज्ञान भी मानता है कि हर पीढ़ी के भीतर मातृकुल तथा पितृकुल दोनों में पहले की पीढियों के समन्वित गुणसूत्र उपस्थित होते हैं। चावल के पिंड जो पिता, दादा, परदादा और पितामह के शरीरों का प्रतीक हैं, आपस में मिलकर फिर अलग बांटते हैं। यह प्रतीकात्मक अनुष्ठान जिन-जिन लोगों के गुणसूत्र (जीन्स) श्राद्ध करने वाले की अपनी देह में हैं, उनकी तृप्ति के लिए होता है।

श्राद्ध के नियम

दैनिक पंच यज्ञों में पितृ यज्ञ को खास बताया गया है। इसमें तर्पण और समय-समय पर पिंडदान भी सम्मिलित है। पूरे पितृपक्ष भर तर्पण आदि करना चाहिए। इस दौरान कोई अन्य शुभ कार्य या नया कार्य अथवा पूजा-पाठ अनुष्ठान संबंधी नया काम नहीं किया जाता।

शरद ऋतु के आगमन का पर्व सायर

हिमाचल प्रदेश में लगभग हर देशी महीने में कोई न कोई उत्सव या त्योहार मनाया जाता है। भादों का महीना समाप्त होते ही आश्विन महीना शुरू होता है। इस संक्रांति को जो उत्सव पड़ता है, वह है सैर यानी सायर उत्सव'.

त्योहार और मेले हिमाचल के लोगों के सांस्कृतिक जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। ऋतुओं ने भी त्योहारों को विशिष्ट स्वरूप देने में भूमिका निभाई है। हरेक ऋतु से जुड़े हुए त्योहार हैं। हिमाचल में यूं तो साल भर बहुत से त्योहार मनाए जाते हैं और लगभग हर महीने की संक्रांति यानी 'सज्जी या साजा' को एक विशेष नाम से जाना जाता है और त्योहार के तौर पर मनाया जाता है। क्रमानुसार भारतीय देशी महीनों के बदलने और नए महीने के शुरू होने के प्रथम दिन को संक्रांति कहा जाता है। हिमाचल प्रदेश में लगभग हर देशी महीने में कोई न कोई उत्सव या त्योहार मनाया जाता है। भादों का महीना समाप्त होते ही आश्विन महीना शुरू होता है। इस संक्रांति को जो उत्सव पड़ता है, वह है सैर यानी सायर उत्सव। सितंबर महीने यानी आश्विन महीने की संक्रांति को कांगड़ा, मंडी, हमीरपुर, बिलासपुर और सोलन सहित प्रदेश के अन्य कुछ जिलों में भी सैर या सायर का त्योहार काफी धूमधाम से मनाया जाता है। भादों यानी काले महीने में मायके गई नवेली दुल्हनें भी इस महीने वापस अपने ससुराल आ जाती हैं।

वास्तव में यह त्योहार वर्षा ऋतु के खत्म होने और शरद ऋतु के आगाज के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इस समय खरीफ की फसलें पक जाती हैं और काटने का समय होता है, तो भगवान को धन्यवाद करने के लिए यह त्योहार मनाते हैं। सैर के बाद ही खरीफ की फसलों की कटाई की जाती है। इस दिन 'सैरी माता' को फसलों का अंश और मौसमी फल चढ़ाए जाते हैं और साथ ही राखियां भी उतार कर सैरी माता को चढ़ाई जाती हैं। सैर मनाने का तरीका हर क्षेत्र का अलग-अलग है। जहां एक तरफ कुल्लू, मंडी, कांगड़ा आदि क्षेत्रों में सैर एक पारिवारिक त्योहार के रूप में मनाई जाती है, वहीं शिमला और सोलन में इसे सामुहिक तौर पर मनाया जाता है। इस दिन जगह-जगह मेले लगते हैं और लोग इनमें उत्साह से शामिल होते हैं। ढोल-नगाड़े बजाए जाते हैं और अन्य लोकगीतों और लोकनृत्यों का आयोजन किया जाता है। शिमला के मशोबरा और सोलन के अर्की में 'सांडों' का युद्ध' कराया जाता है। यह लगभग स्पेन, पुर्तगाल और लैटिन अमरीका में होने वाले युद्ध की तरह ही होते हैं। लोग मेलों में बरतन, कपड़े खरीदते हैं। लोग अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों को मिठाई और अखरोट बांटते हैं। घरों में अनेकों पकवान भी बनते हैं। सोलन के अर्की में सायर का जिला स्तरीय मेला होता है। कुल्लू में सैर को सैरी साजा के रूप में मनाया जाता है। सैर के पिछली रात को दावत दी जाती है। अगले दिन कुल देवता की पूजा की जाती है, जिसके लिए सुबह से ही तैयारी होना शुरू हो जाती है। साफ सफाई करने के बाद नहा धोकर हलवा तैयार किया जाता है और सबमें बांटा जाता है। यह त्योहार रिश्तेदारों से मिलने जुलने और उनके घर जाने का होता है। एक-दूसरे को दुर्वा, जिसे स्थानीय भाषा में 'जूब कहते हैं, देकर उत्सव की बधाई दी जाती है। लोगों का मानना है कि इस दिन देवता स्वर्ग से धरती पर आते हैं और लोग ढोल-नगाड़ों के साथ उनका स्वागत करते हैं।

वैसे भी हिमाचल में हर गांव का अपना एक देवी-देवता होता है, तो लोग इस दिन उनकी पूजा और स्वागत करते हैं। मंडी में भी सैर हर्षोल्लास के साथ मनाई जाती है। मंडी में इस दिन अखरोट खरीदे और बांटे जाते हैं। मंडी में सडक़ किनारे जगह-जगह आप अखरोट बेचने वालों को देख सकते हैं। सायर के त्योहार के दौरान अखरोट खेलने की परंपरा ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी है। गली चौराहे या फिर घर के आंगन के कोने पर इस खेल को खेला जाता है। इसमें खिलाड़ी जमीन पर बिखरे अखरोटों को दूर से निशाना लगाते हैं। अगर निशाना सही लगे तो अखरोट निशाना लगाने वाले के होते हैं। इस तरह यह खेल बच्चे, बूढ़े और नौजवानों में खासा लोकप्रिय है। इसके अलावा कचौरी, सिड्डू, चिलड़ू, गुलगुले जैसे पकवान भी बनाए जाते हैं। बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद लेने की भी परंपरा है। इसे स्थानीय बोली में दुर्व देना कहा जाता है। इसके लिए दुर्व देने वाला व्यक्ति अपने हाथ में पांच या सात अखरोट और दूर्व लेता है। जिसे बड़े बुजुर्गों के हाथ में देकर उनके पांव छूता है। वहीं बड़े बुजुर्ग भी दूर्व अपने कान में लगाकर आशीर्वाद देते हैं। अगर कोई सायर के पर्व पर बड़े बुजुर्गों को दूर्वा न दे, तो इसका बुरा माना जाता है। यहां तक कि छोटे मोटे मनमुटाव भी दुर्व देने से मिट जाते हैं। कांगड़ा, हमीरपुर और बिलासपुर में भी सैर मनाने का अलग प्रचलन है। सैर की पूजा के लिए एक दिन पहले से ही तैयारी शुरू कर दी जाती है और पूजा की थाली रात को ही सजा दी जाती है। हर सीजन की फसलों का अंश थाली में सजाया जाता

है। उसके लिए गेहूं को थाली में फैला दिया जाता है और उसके ऊपर मक्की, धान की बालियां, खीरा, अमरूद, गलगल आदि ऋतु फल रखे जाते हैं। हर फल के साथ उसके पत्ते भी पूजा में रखना शुभ माना जाता है।

पहले के समय में सैर वाले दिन गांव का नाई सुबह होने से पहले हर घर में सैरी माता की मूर्ति के साथ जाता था और लोग उसे अनाज, पैसे और सुहागी चढ़ावे के रूप में देते थे। हालांकि अब त्योहारों और उत्सवों को उस रूप में नहीं मनाया जाता है, जिस तरह से पुराने लोग मनाते थे, परंतु फिर भी गांवों में अभी भी लोगों ने बहुत हद तक परंपराओं को संजोकर रखा हुआ है। अब लोग सैरी माता की जगह गणेशजी की मूर्ति की पूजा करते हैं और अब नाई लोगों के घर नहीं जाते हैं। दिन में छः-सात पकवान बनाए जाते हैं, जिनमें पतरोड़े, पकोड़ू और भटूरू जरूर होते हैं। इसके अलावा खीर, गुलगुले, चिलड़ू आदि पकवान भी बनाए जाते हैं। हालांकि आज के बदलते युग में सब कुछ बदल रहा है। आज की युवा पीढ़ी इन सब बातों को अनदेखा कर रही है, जो प्राचीन संस्कृति के लिए सही नहीं है। आज लोग समय का बहाना बनाकर ऐसे उत्सवों से दूर होते जा रहे हैं और यह उत्सव सिमटते जा रहे हैं, जो प्रदेश की संस्कृति के लिए उचित नहीं। आवश्यकता है अपने तीज त्योहारों को मिलजुल के मनाने की और अपनी परंपरा को कायम रखने की ताकि हमारी संस्कृति जीवित रह सके।

सीएम केजरीवाल ने सपत्नी बजरंग बली का दर्शन कर लिया आशीर्वाद

सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को कनॉट प्लेस स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर में बजरंग बली के दर्शन किए और पूजा-अर्चना कर सभी की सुख-समृद्धि के लिए आशीर्वाद लिया। एक फर्जी मामले में जेल में बंद अरविंद केजरीवाल पांच महीने बाद शुक्रवार को बाहर आने के बाद पहली बार पत्नी सुनीता केजरीवाल के साथ बजरंग बली के दर्शन करने पहुंचे थे। मंदिर के महंत ने सीएम केजरीवाल को तिलक लगाकर बजरंग बली का गदा और त्रिकोणीय ध्वज भेंट किया। इसके बाद सीएम ने पत्नी के साथ बजरंग बली का ध्यान किया और शिवलिंग पर जल चढ़ाया। इस दौरान मौजूद पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, सांसद संजय सिंह, कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज समेत कई अन्य वरिष्ठ नेताओं ने भी बजरंगी बली की पूजा-अर्चना की।

सीएम अरविंद केजरीवाल ने एक्स पर बजरंग बली के दर्शन करने की वीडियो साझा कर कहा कि आज अपनी धर्मपत्नी सुनीता केजरीवाल और अन्य साथियों के साथ कनॉट प्लेस स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर पहुंच हनुमान जी का पूजन-अर्चन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। अन्याय के खिलाफ इस संघर्ष में हनुमान जी का आशीर्वाद सदा हमारे उपर बना रहा। प्रभु से सभी की सुख-समृद्धि की प्रार्थना की। देश को बचाने की इस लड़ाई में प्रभु हम सबका ये साहस बनाए रखें।

आम आदमी पार्टी ने अपने अधिकारिक एक्स हैंडल पर सीएम अरविंद केजरीवाल और उनकी धर्मपत्नी समेत पार्टी के अन्य नेताओं की हनुमान मंदिर में पूजा अर्चना करने हुए की वीडियो और फोटो साझा किया। पार्टी ने कहा कि एक फ़र्ज़ी केस और तानाशाही से लड़कर जेल से बाहर आए सीएम अरविंद केजरीवाल ने कनॉट प्लेस के प्राचीन हनुमान मंदिर में अंजनी पुत्र हनुमान जी और भगवान भोलेनाथ जी के दर्शन-पूजन कर समस्त देशवासियों के सुख-शांति के लिए प्रार्थना की। भगवान हनुमान जी के आशीष से ही तानाशाह के खिलाफ जेल में भी अरविंद केजरीवाल मज़बूती से लड़े। इस दौरान मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी सुनीता केजरीवाल, पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, सांसद संजय सिंह, मंत्री सौरभ भारद्वाज ने भी पूजन-अर्चन कर आशीर्वाद लिया।

वहीं, ''आप'' के वरिष्ठ नेता एवं दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने भी अपने एक्स हैंडल पर कुछ तश्वीरें साझा की। उन्होंने अपनी पोस्ट में लिखा, ''श्रीगुरु चरन सरोज रज निजमनु मुकुरु सुधारि। बरनउं रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।। आज अरविंद केजरीवाल के साथ दिल्ली के प्राचीन हनुमान मंदिर जाकर हनुमान जी के दर्शन किए और आशीर्वाद लिया। यह हनुमान जी की कृपा ही है, जिसकी वजह से तमाम साजिशों के बाद भी अरविंद केजरीवाल और हम सब, आप सब के बीच में हैं। भगवान बजरंग बली सभी दिल्लीवालों पर अपनी कृपा बनाएं रखें और सभी के कष्टों को दूर करें।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के तहत मुख्यमंत्री का एक भी काम नही रूक सकता : संजय सिंह

सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने सीएम अरविंद केजरीवाल की जमानत की शर्तों पर झूठ फैला रही भाजपा को आड़े हाथ लिया है। ''आप'' के राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं सासंद संजय सिंह ने सुप्रीम कोर्ट ने मुख्यमंत्री के रूप में अरविंद केजरीवाल को काम करने पर कोई रोक नहीं लगाई है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के तहत मुख्यमंत्री का एक भी काम नही रूक सकता और अरविंद केजरीवाल दिल्लीवालों के सारे काम करेंगे। इसलिए भाजपा झूठ फैलाना बंद करे। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने अप्रूवल के लिए एलजी के पास जाने वाली किसी भी फाइल पर मुख्यमंत्री को हस्ताक्षर करने से नहीं रोका है। दरअसल, भाजपा इसलिए झूठ फैला रही है, क्योंकि वह दिल्लीवालों की मुफ्त बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य और महिलाओं की बस यात्रा रोकना चाहती है।

पार्टी मुख्यालय पर शनिवार को प्रेसवार्ता कर संजय सिंह ने कहा कि अरविंद केजरीवाल को जमानत मिलने के बाद से भाजपाई चीख-चिल्ला रहे हैं कि उन पर कई रोक लगी है। इसीलिए मैं भाजपा को अनपढ़ों की जमात कहता हूं। भाजपा गुस्से और नफरत से भरी हुई है। भाजपा बेशर्मी और निर्लज्जता की पराकाष्ठा पर जीती है। सुप्रीम कोर्ट का इतना बड़ा फैसला आ गया। इसके बावजूद बेशर्मी से भाजपा वाले झूठ बोलते हैं। पहले कहते थे कि क्या किसी को जमानत मिली है? अब जब जमानत मिल गई, तो कह रहे हैं कि जमानत ही तो मिली है। इस बार दिल्ली विधानसभा चुनाव में दिल्लीवाले भाजपा की जमानत जब्त कराएंगे और कहेंगे कि भाजपा की जमानत ही तो जब्त हुई है, तब इन्हें अक्ल आएगी। इनके झूठ बोलने पर ही मैंने भाजपा का नाम 'बेशर्म झूठा पार्टी' रख दिया है। बेशर्मी से झूठ बोलने का रिकॉर्ड केवल भाजपा बना सकती है।

संजय सिंह ने कहा कि भाजपाई कह रहे हैं कि केजरीवाल साइन नहीं कर सकते, मुख्यमंत्री के तौर पर काम नहीं कर सकते। उन्होंने यह सपना कहां देख लिया? उनके मन में लड्डू क्यों फूट रहे हैं? भाजपा दिल्ली वालों का काम रोकना चाहती है। वह लोगों की मुफ्त बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य और महिलाओं की मुफ्त बस यात्रा रोकना चाहती है। क्या उसने कोर्ट का ऑर्डर पढ़ा है? सीएम अरविंद केजरीवाल के पास कोई विभाग नहीं है। सारे मंत्री अपना-अपना काम करते हैं और अपनी-अपनी फाइलों पर खुद साइन करते हैं। अरविंद केजरीवाल उन्हीं फाइलों पर साइन करते हैं जो अप्रूवल के लिए एलजी से पास होती हैं और जो फाइलें एलजी के पास जाएंगी, सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें साइन करने से नहीं रोका है।

उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल पहले की तरह ही दिल्ली के मुख्यमंत्री के रूप में काम करते रहेंगे, दिल्ली के लोगों के लिए लड़ते रहेंगे और उन्हें उनका हक दिलाते रहेंगे। दिल्ली के लोगों का एक भी काम नहीं रुकेगा। सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार और अरविंद केजरीवाल को किसी भी काम करने से नहीं रोका है। उन्हें हर उस जरूरी फाइल पर साइन करने का अधिकार है, जो एलजी के पास जाती है। अरविंद केजरीवाल दिल्ली के लोकप्रिय मुख्यमंत्री हैं। आजादी के बाद वह पहले ऐसे मुख्यमंत्री हैं जिन्होंने बिजली, पानी, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में अनुकरणीय काम किया है, और आगे भी करते रहेंगे। बेशर्म झूठा पार्टी को चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।

अगर स्टूडेंट्स को सही उम्र में सही मौक़े मिले तो वो बहुत कुछ हासिल कर सकते है : आतिशी

सुषमा रानी

नई दिल्ली। बिज़नेस ब्लास्टर्स प्रोग्राम 2024-25 के दिल्ली सरकार के स्कूलों में लॉंच के बाद शिक्षा मंत्री आतिशी ने श्यामा प्रसाद मुखर्जी सर्वोदय विद्यालय, सी.आर.पार्क में स्टूडेंट एंत्रप्रेन्योर्स से उनके स्टार्ट-अप के विषय में बातचीत की।

इस मौक़े पर शिक्षा मंत्री आतिशी ने कहा कि, ₹मुझे हमारे स्टूडेंट्स में ये आत्मविश्वास देखकर बहुत अच्छा लगा। उन्होंने कहा कि, स्कूल में पढ़ रहे बच्चे बहुत क्रिएटिव होते है और बिज़नेस ब्लास्टर्स प्रोग्राम ने बच्चों की क्रिएटिविटी को बाहर खोज निकालने का काम किया है। इस प्रोग्राम ने बच्चों को लीक से हटकर नए आईडिया सोचने और उसपर काम करने का मौक़ा दिया है। उन्होंने कहा कि, इस प्रोग्राम के ज़रिए हमारे स्टूडेंट्स ने ख़ुद के और अपने आसपास और पर्यावरण की हर छोटी-बड़ी समस्याओं को समझा और अपने स्टार्ट-अप के रूप में उसका समाधान तैयार किया है।

शिक्षा मंत्री आतिशी ने कहा की अगर स्टूडेंट्स को सही उम्र में सही मौक़े मिले तो वो बहुत कुछ हासिल कर सकते है। उन्होंने कहा कि, बिज़नेस ब्लास्टर्स के ज़रिए कुछ समय में ही हमारे स्टूडेंट्स ने जिन स्किल्स को सीखा है, उसे सीखने में लोगों को वर्षों लग जाते है।

शिक्षा मंत्री आतिशी ने कहा कि, आज हमारे स्टूडेंट्स में जो आत्मविश्वास है वो आगे भी बनाए रखे। इसी आत्मविश्वास और मेहनत के दम पर वो सभी

चुनौतियों से लड़ते हुए सफलता पा सकते है। उन्होंने कहा कि हमारे स्टूडेंट्स का ये आत्मविश्वास उन्हें उनके साथ-साथ पूरे समाज और देश की तरक्क़ी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि, आज देश में बेरोज़गारी सबसे बड़ी समस्या है। युवा स्कूल-कॉलेज से पढ़ाई कर निकल रहे है लेकिन उनके लिए नौकरियाँ नहीं है। ऐसे में बिज़नेस ब्लास्टर प्रोग्राम इस समस्या का समाधान बनकर आया है, जगह हमारे स्टूडेंट्स नौकरी ढूँढने वाले नहीं बल्कि नौकरी देने वाले बन रहे है।

शिक्षा मंत्री आतिशी ने कहा कि, मुझे भरोसा है कि, हमारे स्टूडेंट्स के ये शानदार स्टार्ट-अप आइडियाज़ आने वाले समय में यूनिकॉर्न के रूप में बदलेंगे और देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ायेंगे। और इस बात का उदाहरण बनेंगे कि वो किसी पर निर्भर नहीं है बल्कि ख़ुद अपना भविष्य बना सकते है और लाखों और लोगों को आगे बढ़ने के मौक़े दे सकते है।

स्टूडेंट्स ने बताया कैसे बिज़नेस ब्लास्टर्स ने बदली उनकी सोच

शिक्षा मंत्री आतिशी से बिज़नेस ब्लास्टर्स के पिछले साल के अपने अनुभवों को साझा करते हुए स्टूडेंट्स ने कहा कि, बिज़नेस ब्लास्टर्स ने हमें मुश्किलों से लड़ना सिखाया है और अपने आइडियाज़ पर और ख़ुद पर विश्वास करना सिखाया है।

स्टूडेंट्स ने साझा करते हुए कहा कि, इस प्रोग्राम ने उन्हें टाइम मैनेजमेंट, फाइनेंस मैनेजम्वंट, सेल्स, मार्केटिंग, लीडरशिप, टीम वर्क जैसे स्किल्स तो दिए ही साथ में हिम्मत भी दी कि बेशक कितनी भी मुश्किलें हो लेकिन कभी हार नहीं माननी चाहिए और मेहनत करते हुए हमेशा कुछ नया करना चाहिए।

केजरीवाल सरकार के यंग एंत्रप्रेन्योर्स के बिज़नेस आइडियाज़

एब्सेंटिज्म को रोकेगा AI बेस्ड एप स्टार्टअप*

'नेचर नेक्सस' बनेगा पर्यावरण का साथी*

द ब्राइट फ्यूचर' के साथ चुने क्लॉथ्स ऑफ़ योर ड्रीम*

स्टूडेंट्स को एक ही प्लेटफ़ार्म पर विभिन्न जानकारी देने में सहायक बनेगा 'वेद सहायक'*

ऑर्गेनिक सेंटेड मोमबत्तियाँ करेगी तनावमुक्त*

स्मार्ट प्लांट वॉटरिंग सिस्टम करेगा पौधों की देखभाल*

धर्म तब ही जीवित रह सकता है जब देश एकजुट हो : डॉ आनंद कुमार

सुषमा रानी

नई दिल्ली। ग्रीन पार्क नई दिल्ली में राष्ट्र निर्माण पार्टी द्वारा अपने प्रमुख पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ एक सभा का आयोजन किया जिसमें डॉक्टर आनंद कुमार को एक बार फिर से समिति ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में चयन किया गया. इस अवसर पर पार्टी के संस्थापक ठाकुर विक्रम सिंह ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि डॉक्टर आनंद ने इस पार्टी के कार्य को बख़ूबी संभाला है, वह पार्टी को और भी आगे ले जाएंगे बस हम सबको उन्हें तन- मन -धन से सहयोग करना है, डॉक्टर आनंद जो की एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं गृह मंत्रालय में दे चुके हैं उन्होंने निर्विरोध चुने जाने के बाद जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे पारिवारिक जीवन मूल्य समाप्त हो रहे हैं स्वच्छंद यौनाचार समलैंगिकता व लिव इन रिलेशनशिप के नाम पर बढ़ावा दिया जा रहा है. वैवाहिक संस्था को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है ऐसी स्थिति में हमारे बच्चे किस प्रकार बुद्धिमान संस्कारवान एवं स्वस्थ हो सकते हैं जब परिवार ही समाप्त हो जाएंगे तो समाज और राष्ट्र कैसे बचेगा, दुर्भाग्य से यह कार्य सुप्रीम कोर्ट और वर्तमान केंद्रीय सरकार द्वारा किया जा रहा है वह सरकार जो कि अपने आप को हिंदुत्व का संरक्षण मानती है साथ ही डॉक्टर आनंद कहा कि बांग्लादेश में जिस तरह हिंदुओं पर अत्याचार हुए वह अशोभनीय है और हमारा मानना यह है कि हमारे देश के प्रधानमंत्री को इसके विरुद्ध बुलंद आवाज उठानी चाहिए क्योंकि वह इस देश के राजा है और उनको अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए हम सनातन धर्म की बात कर रहे हैं यह सनातन धर्म तब ही जीवित रह सकता है जब हम अपने देश के लिए एकजुट हो और अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज को बुलंद करें। इस अवसर पर राष्ट्रीय महासचिव, मनोज गुलाटी ने कहा की राष्ट्र निर्माण पार्टी ने हमेशा उन चीज़ो का विरोध किया जिससे देश के मान सम्मान को क्षति पहुँचती हो, अगर दिल्ली की बात करे तो कही सफाई नज़र नहीं आती, जगह जगह नाले खुदे पड़े है साथ ही दिल्ली में बढ़ते हुए सड़कों के गड्ढों को देखकर तकरीबन रोज ही कोई ना कोई घटना दुर्घटना हो रही है। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दानवीर विद्यालंकार ने कहा कि देश के युवाओं रोजगार चाहिए जल्दी है दिल्ली और हरियाणा में चुनाव होने वाले है देश को ऐसी पार्टी की जरूरत है जो उनकी परेशानियों का समाधान कर सके और देश को आगे ले जा सके. इस अवसर पर पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव मनोज गुलाटी, राधाकांत शास्त्री राष्ट्रीय सचिव, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दानवीर विद्यालंकार मौजूद रहे।

दिल्ली में गरजा बुलडोजर, भारी विरोध के बीच कबाड़ी और फर्नीचर बेचने वाले पर हुआ एक्शन

दिल्ली के सीमापुरी इलाके में नगर निगम ने कबाड़ी और फर्नीचर बेचने वाले पर एक्शन लिया। यह कार्रवाई का कारण इन लोगों द्वारा सड़क पर किए गए कब्जे थे। जिसे निगम टीम ने हटाया। यह कार्रवाई अतिक्रमण हटाओ अभियान के तहत हुई। हालांकि जब प्रशासन तोड़फोड़ कर रही थी तब इन लोगों ने काफी विरोध किया था।

पूर्वी दिल्ली। सीमापुरी इलाके में कबाड़ियों द्वारा सड़क पर किए गए कब्जे को निगम के दस्ते ने बुलडोजर की मदद से हटा दिया है। साथ ही सड़क के दूसरी ओर फर्नीचर वालों के अतिक्रमण पर भी कार्रवाई की गई है। शाहदरा नगर निगम उत्तरी जोन की टीम ने यह कार्रवाई शुक्रवार को अतिक्रमण हटाओ अभियान के तहत की है।

कार्रवाई के दौरान भारी पुलिस बल थी तैनात

एक सितंबर के अंक में प्रकाशित खबर पर संज्ञान लेते हुए निगम के दस्ते ने सख्ती से कार्रवाई की। बुलडोजर की सहायता से अनधिकृत रूप से कबाड़ियों द्वारा फुटपाथ और सड़क पर किए गए लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी तक के अतिक्रमण को हटाया दिया गया। कार्रवाई के दौरान एक ट्रक कबाड़ व गंदगी और एक ट्रक फर्नीचर उठाया गया है। इस दौरान कबाड़ियों व फर्नीचर वालों ने काफी विरोध किया, लेकिन पुलिस बल की मौजूदगी में उनकी एक न चल सकी।

आधी सड़क और फुटपाथ को घेरने का आरोप

बता दें कि सीमापुरी डिपो के पास कबाड़ियों की मनमानी खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही थी। इन्होंने कबाड़ के बोरों से आधी सड़क और फुटपाथ को घेर रखा था। ऐसे में यहां से गुजरने वाली बसों व वाहन चालकों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। स्थानीय लोग इनसे शिकायत करते थे तो ये लोग झगड़ने लगते थे। इस मामले के संबंध में दैनिक जागरण ने एक सितंबर के अंक में 'नहीं खत्म हो रही कबाड़ियों की मनमानी, आधी सड़क पर कब्जा' शीर्षक के साथ प्रमुखता से खबर को प्रकाशित किया था। खबर पर संज्ञान लेते हुए निगम ने शुक्रवार को कार्रवाई की। क्षेत्र में दोबारा अतिक्रमण न हो सके इसके लिए संबंधित लाइसेंसिंग निरीक्षक, सेनेटरी निरीक्षक को सख्त निर्देश दिए गए हैं।

कविता : पुल हुआ गुल

आजकल गिरने के लिए बनते हैं पुल।
ईट, सीमेंट और रेती जब होती है गुल।

हाटकेश्वर पुल ने भी लिया होगा संकल्प।
आम आदमी को दूंगा एक नया विकल्प।

जब हुए इस पर बयालिस करोड़ खर्च।
सोचा ना था यह सब हो जाएगा व्यर्थ।

सौ साल चलने का था इसका जीवनकाल।
पाँच साल में ही हो गया इसका बुरा हाल।

पुल बनकर भी ना हुआ इसका उपयोग।
जनता के दु:ख कम होने का न था योग।

भ्रष्टाचार के भोग का सफल हुआ प्रयोग।
52 करोड़ में टूटेगा देखते रह जाएंगे लोग।
(संदर्भ : हाटकेश्वर ब्रिज, अहमदाबाद।)

संजय एम. तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

सफदरजंग अस्पताल ने पहला सफल बाल चिकित्सा अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण किया

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। सफदरजंग अस्पताल को अपनी नई 3टेस्ला एमआरआई मशीन के उद्घाटन की घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है, जो मरीजों के कल्याण और उन्नत चिकित्सा देखभाल के लिए अस्पताल की निरंतर प्रतिबद्धता में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

रेडियोडायग्नोसिस विभाग में स्थापित नई एमआरआई मशीन, डायग्नोस्टिक तकनीक में नवीनतम उन्नति का प्रतिनिधित्व करती है। बेहतर इमेजिंग क्षमताओं के साथ, मशीन कई तरह की स्थितियों के निदान में बेहतर सटीकता का वादा करती है। यह अपग्रेड मरीजों को अधिक सटीक निदान प्रदान करने और डायग्नोस्टिक प्रक्रिया की समग्र दक्षता में सुधार करने के लिए तैयार है।

इसका उद्घाटन चिकित्सा अधीक्षक डॉ वंदना तलवार, प्रिंसिपल, डॉ गीतिका खन्ना और एएमएस डॉ पीएस भाटिया, डॉ आरपी अरोड़ा, डॉ के. सूरी और डॉ जे. मणि और डॉ के. कुमार ने किया। यह प्रतिष्ठित अस्पताल की निरंतर शैक्षणिक उत्कृष्टता को दर्शाता है।

रेडियोडायग्नोसिस विभाग की एचओडी डॉ. अमिता मलिक ने कहा, ₹इस उन्नत एमआरआई मशीन की शुरुआत हमारे मरीजों को उच्चतम गुणवत्ता वाली देखभाल

प्रदान करने के प्रति हमारे समर्पण को रेखांकित करती है।₹ इसकी उन्नत इमेजिंग तकनीक के साथ, हम अधिक सटीक निदान प्रदान करने में सक्षम होंगे, जिससे अधिक प्रभावी उपचार योजनाएँ और बेहतर रोगी परिणाम प्राप्त होंगे। नई एमआरआई मशीन रोगी को लाभान्वित करेगी और प्रतीक्षा समय को काफी कम करेगी, ₹चिकित्सा अधीक्षक डॉ. वंदना तलवार ने आश्वासन दिया।

एमआरआई मशीन में नवीनतम सुविधाएँ हैं, जिसमें उच्च-रिज़ॉल्यूशन इमेजिंग और तेज़ स्कैनिंग समय शामिल हैं, जो रोगी की असुविधा और प्रतीक्षा समय को कम करता है। इस तकनीकी उन्नति से अस्पताल की नैदानिक सेवाओं में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है, जिससे रोगियों को समय पर और सटीक देखभाल मिल सके।

सफदरजंग अस्पताल उन्नत तकनीक में निवेश करने और देखभाल के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध है। नई एमआरआई मशीन इस प्रतिबद्धता का प्रमाण है, जो रोगी देखभाल की गुणवत्ता को बढ़ाने और समुदाय में स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने के अस्पताल के मिशन का समर्थन करने का वादा करती है।

सफदरजंग अस्पताल ने मरीजों की देखभाल को बेहतर बनाने के लिए अत्याधुनिक एमआरआई मशीन का अनावरण किया

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली। नई दिल्ली सफदरजंग अस्पताल को अपनी नई 3टेस्ला एमआरआई मशीन के उद्घाटन की घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है, जो मरीजों के कल्याण और उन्नत चिकित्सा देखभाल के लिए अस्पताल की निरंतर प्रतिबद्धता में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

रेडियोडायग्नोसिस विभाग में स्थापित नई एमआरआई मशीन, डायग्नोस्टिक तकनीक में नवीनतम उन्नति का प्रतिनिधित्व करती है। बेहतर इमेजिंग क्षमताओं के साथ, मशीन कई तरह की स्थितियों के निदान में बेहतर सटीकता का वादा करती है। यह अपग्रेड मरीजों को अधिक सटीक निदान प्रदान करने और डायग्नोस्टिक प्रक्रिया की समग्र दक्षता में सुधार करने के लिए तैयार है।

इसका उद्घाटन चिकित्सा अधीक्षक डॉ वंदना तलवार, प्रिंसिपल, डॉ गीतिका खन्ना और एएमएस डॉ पीएस भाटिया, डॉ आरपी अरोड़ा, डॉ के. सूरी और डॉ जे. मणि और डॉ के. कुमार ने किया। यह प्रतिष्ठित अस्पताल की निरंतर शैक्षणिक उत्कृष्टता को दर्शाता है।

रेडियोडायग्नोसिस विभाग की एचओडी डॉ. अमिता मलिक ने कहा, "इस उन्नत एमआरआई मशीन की शुरुआत हमारे मरीजों को उच्चतम गुणवत्ता वाली देखभाल प्रदान करने के प्रति हमारे समर्पण को रेखांकित करती है।₹ इसकी उन्नत इमेजिंग

तकनीक के साथ, हम अधिक सटीक निदान प्रदान करने में सक्षम होंगे, जिससे अधिक प्रभावी उपचार योजनाएँ और बेहतर रोगी परिणाम प्राप्त होंगे। नई एमआरआई मशीन रोगी को लाभान्वित करेगी और प्रतीक्षा समय को काफी कम करेगी, ₹चिकित्सा अधीक्षक डॉ. वंदना तलवार ने आश्वासन दिया।

एमआरआई मशीन में नवीनतम सुविधाएँ हैं, जिसमें उच्च-रिज़ॉल्यूशन इमेजिंग और तेज़ स्कैनिंग समय शामिल हैं, जो रोगी की असुविधा और प्रतीक्षा समय को कम करता है। इस तकनीकी उन्नति से अस्पताल की नैदानिक सेवाओं में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है, जिससे रोगियों को समय पर और सटीक देखभाल मिल सके।

सफदरजंग अस्पताल उन्नत तकनीक में निवेश करने और देखभाल के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध है। नई एमआरआई मशीन इस प्रतिबद्धता का प्रमाण है, जो रोगी देखभाल की गुणवत्ता को बढ़ाने और समुदाय में स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने के अस्पताल के मिशन का समर्थन करने का वादा करती है।

आयटम बुक करके डिलीवरी से पहले ही दिखाते थे रिटर्न, मनी रिफंड का पूरा खेल जान पुलिसवाले भी चकराए

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद से एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। फ्लिपकार्ट से लाखों का रिफंड लेकर फर्जीवाड़ा करने वाले गिरोह का भंडाफोड़ हुआ है। आरोपितों ने डिलीवरी से पहले ही डेटाबेस में हेरफेर कर माल को रिटर्न दिखाया और रिफंड प्राप्त कर लिया। कंपनी के दो पूर्व कर्मचारियों की आईडी का भी इस्तेमाल किया गया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

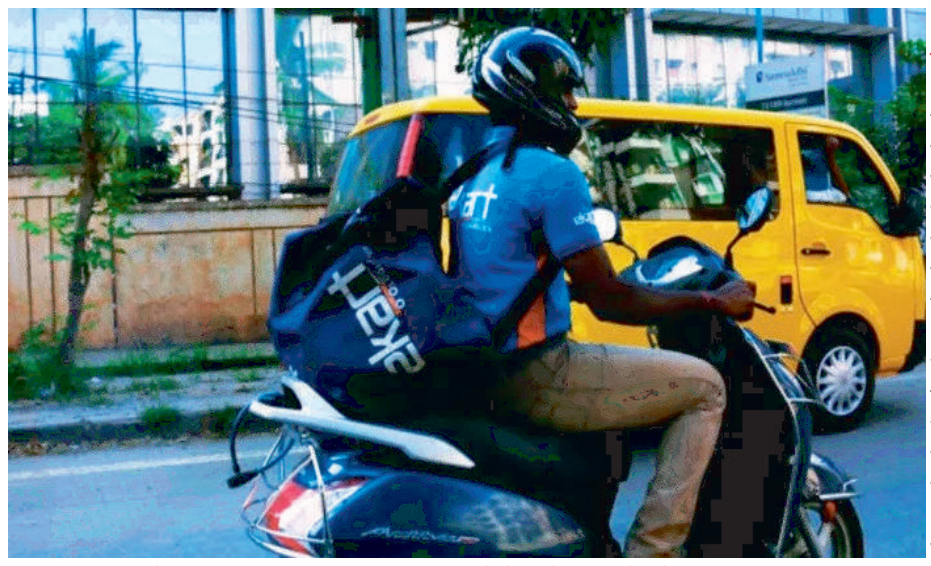

गाजियाबाद। ई-कामर्स कंपनी फ्लिपकार्ट से कई शहरों के लिए महंगे माल का ऑर्डर देकर फर्जीवाड़ा कर लाखों का रिफंड लेने का मामला सामने आया है।

आरोपितों ने डिलीवरी हब कर्मचारियों की आईडी का प्रयोग कर माल दिए गए पते पर डिलीवर होने से पहले ही डाटाबेस में हेरफेर कर डिलीवर दिखा दिया।

फिर माल को रिटर्न दिखाकर रिफंड प्रोसेस पूरा किया और खाते में रिटर्न भुगतान भी प्राप्त कर लिया। जबकि वास्तविकता में माल बुक होने के बाद रास्ते में ही था।

स्मार्टवॉच जैसे महंगे आइटम करते थे बुक

कंपनी की जांच में सामने आया है कि स्मार्टवॉच और महंगे पेन की बुकिंग फर्जी नाम-पते पर खोले गए खाते से की गई है। हर ऑर्डर में कैश ऑन डिलीवरी का विकल्प भुगतान के लिए चुना गया।

माल डिलीवर करने वाली कंपनी ई-कार्ट ने साइबर क्राइम थाने में मुकदमा दर्ज कराकर आरोपित पकड़ने की मांग की है। पुलिस का कहना है कि जिस बैंक खाते में रिफंड लिया गया है उसकी जानकारी जुटाकर शीघ्र आरोपितों को पकड़ा जाएगा।

डीपीएस मेरठ रोड के पास ई-कार्ट कंपनी का डिलीवरी हब है। यह कंपनी फ्लिपकार्ट की सहयोगी कंपनी है जो उसके लिए माल की डिलीवरी कई शहरों में बने हब के जरिए करती है।

गाजियाबाद में एक ऑर्डर बुक होने पर हुआ खुलासा

कंपनी के प्रवर्तन अधिकारी रितिन दीप के मुताबिक बीते दिनों गाजियाबाद में एक स्मार्टवाच की बुकिंग के बाद पैकेट डिलीवरी हब पहुंचने से पहले ही डाटाबेस में माल की डिलीवरी हो गई और माल रिटर्न होने के बाद उसका रिफंड भी ग्राहक के खाते में चला गया।

जांच करने पर पता चला कि कंपनी के पूर्व कर्मचारियों की आईडी का प्रयोग कर डाटाबेस में गलत प्रविष्टि दर्ज कर पूरा फर्जीवाड़ा किया गया है।

कंपनी की जांच में देशभर में ऐसे 55 ऑर्डर सामने आए जिनमें करीब 17 लाख रुपये कीमत की स्मार्टवाच और महंगे पेन को कैश ऑन डिलीवरी विकल्प के साथ बुक किया गया।

आरोपितों ने फर्जीवाड़ा कर 35 बुकिंग का माल रिटर्न दिखाकर 10 लाख 91 हजार रुपये का रिफंड भी बैंक खाते में हासिल कर लिया।

हर बार बैंक खाता और मोबाइल नंबर नया

कंपनी अधिकारी रितिन दीप का कहना है कि जांच में सामने आया है कि आरोपितों ने प्रत्येक बार माल की बुकिंग के लिए फ्लिपकार्ट पर नए मोबाइल नंबर से फर्जी नाम और पते पर आईडी बनाई। लेकिन रिफंड के लिए बंधन बैंक के एक खाते का प्रयोग कर धनराशि वापस ली गई है।

गाजियाबाद के साथ ही बंगलुरू, मुंबई, जयपुर, दिल्ली, हैदराबाद, चेन्नई, सूरत, अहमदाबाद, लखनऊ, मेरठ, चंडीगढ़ समेत देश के 55 शहरों के लिए माल की बुकिंग कराई गई।

रितिन दीप के मुताबिक कैश ऑन डिलीवरी विकल्प चुनने पर ग्राहक को माल की डिलीवरी के समय भुगतान करना होता है। ऐसे में मामले में यदि उत्पाद वापस होता है तब कंपनी पहले पैकेट वापस लेती है। उसके बाद ग्राहक के दर्ज कराए गए बैंक खाते में रिफंड धनराशि क्रेडिट कर देती है।

कंपनी के दो पूर्व कर्मचारियों की आईडी का भी प्रयोग किया

जांच में सामने आया है कि पूरे फर्जीवाड़े में कंपनी के दो पूर्व कर्मचारी राहुल और सुमित चौहान समेत मौजूदा कर्मचारी कामिनी की आईडी का प्रयोग किया गया है। राहुल और सुमित चौहान की आईडी सिस्टम में बंद नहीं हुई हैं। इसलिए उनकी आईडी के जरिए भी डाटाबेस में फर्जीवाड़ा संभव हुआ।

टॉयलेट के लिए रोका कैंटर, पीछे से ट्रक ने मारी टक्कर; दो की मौत

गुरुग्राम शहर के केएमपी पर खड़े कैंटर में ट्रक की टक्कर लगने से चालक समेत दो लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस की शिकायत में बताया गया कि कैंटर में कुंडली से कॉपर लोड कर उसे गुजरात ले जाना था। तभी रास्ते में फरुखनगर के पास लघुशंका करने के लिए कैंटर को रोका गया। तभी यह हादसा हुआ।

गुरुग्राम। गुरुग्राम के केएमपी पर खड़े कैंटर में पीछे से तेज रफ्तार आए ट्रक ने टक्कर मार दी। हादसे में कैंटर चालक समेत दो लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस को दी शिकायत में कही ये बात

राजस्थान के कोटपूतली निवासी मुकेश ने थाना पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह 11 सितंबर को अपने चचेरे भाई अतुल कुमार के साथ कैंटर से सोनीपत के कुंडली गए थे। इसमें कोटपूतली के पिंटू भी थे। अतुल कैंटर चालक थे।

ट्रक ने कैंटर में जोरदार मारी टक्कर

कैंटर में कुंडली से कॉपर लोड कर गुजरात की तरफ ले जाना था। गुरुवार रात दो बजे गुजरात की तरफ जाते समय केएमपी पर फरुखनगर के पास अतुल ने लघुशंका करने के लिए कैंटर रोका। इसी दौरान अंधेरा होने के कारण पीछे से तेज रफ्तार आ रहे ट्रक ने कैंटर में जोरदार टक्कर मार दी।

हादसे में अतुल कुमार और पिंटू को गंभीर चोटें लगीं। इन्हें अस्पताल ले जाया गया। यहां डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। वहीं घटना के बाद ट्रक चालक ट्रक को मौके पर ही छोड़कर फरार हो गया।

नोएडा DM के 'एक्स' अकाउंट से राहुल गांधी पर की गई अभद्र टिप्पणी, केस दर्ज; विवाद के बीच IAS ने बताई वजह

नोएडा के जिलाधिकारी के एक्स हैंडल से कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर अभद्र टिप्पणी की गई है। इस मामले में प्रशासन ने एफआईआर दर्ज करा दी है और साइबर सेल जांच में जुट गई है। कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने अपने एक्स हैंडल पर प्रधानमंत्री को लेकर टिप्पणी की थी जिसके बाद जिलाधिकारी की एक्स आइडी से श्रीनेत और राहुल गांधी पर आपत्तिजनक टिप्पणी की गई।

ग्रेटर नोएडा। गौतमबुद्ध नगर के जिलाधिकारी के एक्स हैंडल का दुरुपयोग करते हुए कांग्रेस नेता व सदन में नेता प्रतिपक्ष को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी से बवाल मच गया है। प्रशासन की ओर से एफआईआर दर्ज कराई गई है। साइबर सेल ने जांच शुरू कर दी है।

नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर आपत्तिजनक टिप्पणी

कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने अपने एक्स हैंडल पर प्रधानमंत्री को लेकर टिप्पणी की थी। इस टिप्पणी पर गौतमबुद्ध नगर के जिलाधिकारी की एक्स आईडी से सुप्रिया श्रीनेत व नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर आपत्तिजनक टिप्पणी की गई।

जिलाधिकारी ने दर्ज कराई शिकायत

श्रीनेत ने एक्स पर आपत्ति जताई। इसके बाद बवाल मच गया। आनन-फानन में जिला प्रशासन सक्रिय हो गया और एफआईआर दर्ज कराई गई है। जिलाधिकारी के एक्स हैंडल से जानकारी दी गई कि किसी असामाजिक तत्व द्वारा एक्स आईडी का दुरुपयोग करते हुए गलत टिप्पणी की गई है, जिसे गंभीरता से लेते हुए तत्काल एफआईआर कराई गई है। साइबर सेल द्वारा जांच शुरू कर दी गई है।

'टॉयलेट करने की जगह नहीं थी', जूस में पेशाब मिलाकर बेचने वाले आरोपी का पुलिस पूछताछ में चौंकाने वाला बयान

लोनी में जूस में पेशाब मिलाकर बेचने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। इंद्रापुरी कॉलोनी में खुशी जूस कॉर्नर नाम की दुकान पर यह घटना हुई। कुछ लोगों ने दुकानदार और उसके नाबालिग कर्मचारी को बोतल में पेशाब ले जाते देखा और हंगामा कर दिया। पुलिस ने मौके से बोतल में पेशाब बरामद किया है। दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है।

लोनी। लोनी बॉर्डर थाना क्षेत्र की इंद्रापुरी कॉलोनी में शुक्रवार शाम को एक ऐसी खबर सामने आई जिसका वीडियो अब सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है।

दो दिन पहले ही गाजियाबाद की एक मशहूर मिठाई की दुकान के समोसे में मेंढक की टांग मिलने की घटना सामने आने के बाद एक जूस की दुकान पर पेशाब मिलाकर बेचने का आरोप सामने आया है।

आइए जानते हैं कि इस पूरी घटना का खुलासा कैसे हुआ और जूस में पेशाब मिलाने का काम कब से चल रहा था, इसे लेकर पुलिस ने क्या बताया है। पुलिस इस मामले में नाबालिग समेत दो लोगों को गिरफ्तार कर चुकी है।

क्या है पूरा मामला

जानकारी के अनुसार, लोनी बॉर्डर थाना क्षेत्र की इंद्रापुरी कॉलोनी में खुशी जूस कॉर्नर के नाम से एक दुकान है। वहां शुक्रवार शाम देखते-देखते भीड़ जुट गई।

दावा है कि कुछ लोगों ने जूस कॉर्नर में काम करने वाले लड़कों को एक बोतल में पेशाब ले जाते देख लिया। उन्होंने दुकानदार और उसके नाबालिग कर्मचारी पर जूस में पेशाब मिलाकर बेचने का आरोप लगाया। इससे लोगों में भारी रोष हो गया। लोगों ने हंगामा कर दोनों को दबोच लिया। सूचना लोनी बॉर्डर थाना पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची लोनी पुलिस ने दुकान से बोतल में पेशाब बरामद कर लिया।

आरोपियों ने क्या कहा

पुलिस ने नाबालिग समेत दोनों को पकड़ लिया। पुलिस की ओर से मामले में रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस पूछताछ में आरोपितों ने बताया कि दुकान में व आसपास पेशाब करने के लिए जगह नहीं थी। उन्हें दूर जाना पड़ता था।

इसलिए वह बोतल में पेशाब करते थे। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। लोग आरोपितों पर सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।

एक महीने से दुकान चला रहा था आरोपी

पुलिस पूछताछ में दुकानदार ने बताया कि वह मूलरूप से बहराइच के कैसरगंज के रहने वाले हैं। यह दुकान उनके चचेरे भाई की थी। वह एक माह पूर्व अपने घर चले गए। तभी से वह दोनों इस दुकान को चला रहे हैं।

दुकान में कोई सीसीटीवी कैमरा भी पुलिस जांच में लगा नहीं मिला है। घटना के बाद से लोगों में गुस्सा है। उन्होंने क्षेत्र में चल रही कई अन्य दुकानों की भी जांच कराने की मांग की है।

पुलिस को सूचना मिली थी कि खुशी जूस कार्नर पर जूस में पेशाब मिलाया जाता है। मौके पर तलाशी के दौरान एक कैन से पेशाब बरामद हुआ है। पुलिस ने आमिर व उसके बाल अपचारी साथी को पकड़ लिया है। पुलिस की ओर से रिपोर्ट दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।– **भास्कर वर्मा, सहायक पुलिस आयुक्त, अंकुर विहार।**

विज्ञान और कानून की भी भाषा बने हिंदी

विजय गर्ग

पिछले 75 वर्षों में हिंदी को राजभाषा के रूप में पूरी तरह स्थापित करने में कई चुनौतियां सामने आईं। सबसे बड़ी चुनौती भाषाई विविधता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में जहां विभिन्न राज्यों की अपनी-अपनी भाषाएं हैं वहां एक भाषा को पूरे देश में लागू करना जटिल कार्य है किंतु आज के समय में डिजिटल क्रांति के साथ हिंदी को एक नया मंच मिला है।

जब 1949 में संविधान सभा ने हिंदी को देवनागरी लिपि में संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। यह निर्णय स्वतंत्र और लोकतांत्रिक भारत के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण था, जहां भाषा की विविधता के बावजूद एक ऐसी भाषा को राजभाषा चुना गया, जो देश के अधिकांश लोगों के लिए सहज और सुलभ हो। तबसे हिंदी ने अपनी भूमिका में अनेक परिवर्तन देखे हैं और देश की प्रमुख भाषाओं में से एक बनी हुई है।

पिछले 75 वर्षों में हिंदी ने न केवल एक भाषा के रूप में, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह वह भाषा है, जिसने देश के आत्मा को प्रतिबिंबित किया है और स्वतंत्रता के बाद के भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ किया है। तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति के साथ हिंदी ने परंपरा और आधुनिकता के बीच एक पुल का काम किया है। आज हिंदी न केवल भारत, बल्कि कई देशों में भी पढ़ाई और बोली जाती है। हालांकि हिंदी ने एक लंबी यात्रा तय की है, लेकिन इसके सामने आज भी कई चुनौतियां हैं। भाषाई विविधता वाले देश में सभी भाषाओं को सम्मान और महत्व देना आवश्यक है। हिंदी को बढ़ावा देने के साथ-साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी सहेजने और संरक्षित करने की जिम्मेदारी है।

पिछले 75 वर्षों में हिंदी को राजभाषा के रूप में पूरी तरह स्थापित करने में कई चुनौतियां सामने आईं। सबसे बड़ी चुनौती भाषाई विविधता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में जहां विभिन्न राज्यों की अपनी-अपनी भाषाएं हैं, वहां एक भाषा को पूरे देश में लागू करना जटिल कार्य है, किंतु आज के समय में डिजिटल क्रांति के साथ हिंदी को एक नया मंच मिला है। इंटरनेट ने हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहुंचाया है। युवा पीढ़ी हिंदी का उपयोग डिजिटल माध्यमों में कर रही है, जिससे यह भाषा और अधिक सशक्त हो रही है। तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी का उपयोग बढ़ रहा है। इन 75 वर्षों में हिंदी को कानून की भाषा बनाना एक महत्वपूर्ण, लेकिन चुनौतीपूर्ण प्रश्न रहा है। इसके लिए संवैधानिक, कानूनी, प्रशासनिक और सामाजिक स्तर पर व्यापक बदलाव की आवश्यकता होगी। यदि इस दिशा में ठोस कदम उठाए जाते हैं, तो यह भारतीय न्यायिक प्रणाली को अधिक सुलभ और पारदर्शी बना सकता है। इससे न केवल हिंदी भाषी जनता को लाभ होगा, बल्कि यह लोकतंत्र को भी सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम साबित हो सकता है। हिंदी को कानून की भाषा बनाने के लिए कानूनी शिक्षा प्रणाली में भी बदलाव आवश्यक होगा। वर्तमान में अधिकांश कानूनी पाठ्यक्रम और पुस्तकों का माध्यम अंग्रेजी है। हिंदी में कानूनी साहित्य, पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विकास करना होगा। इसके साथ ही वकीलों, न्यायाधीशों और अन्य कानूनी पेशेवरों को हिंदी में दक्षता प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण लेना होगा।

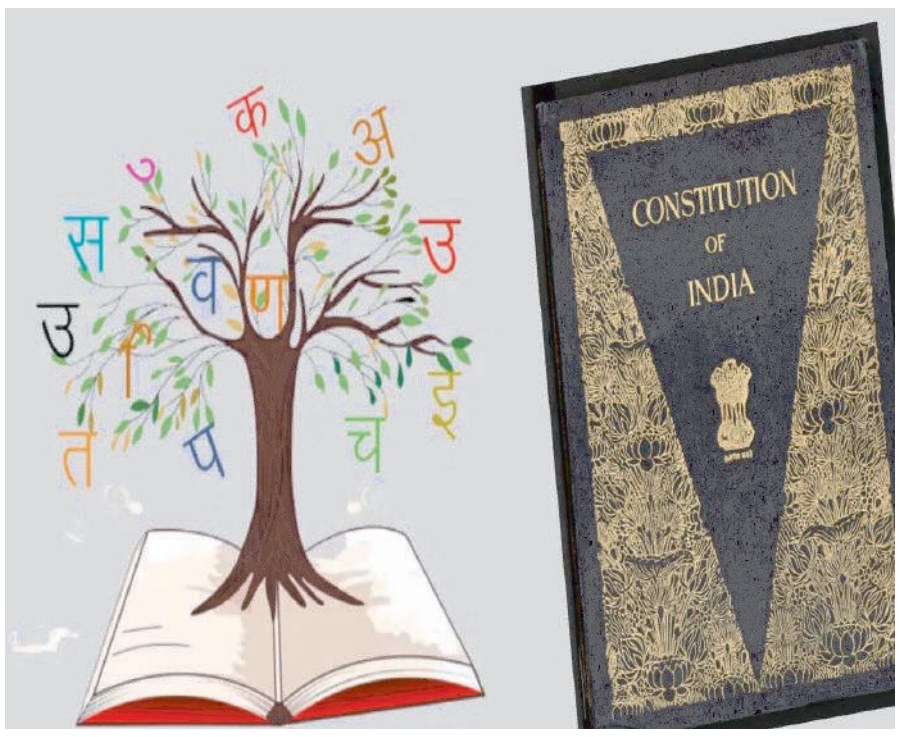

विज्ञान और तकनीक के युग में भाषा का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। आज ज्ञान का सृजन और प्रसार विज्ञान और तकनीक के माध्यम से ही हो रहा है। इन दोनों ही क्षेत्रों में अंग्रेजी का वर्चस्व है। भारत जैसे बहुभाषी देश में जब एक बड़ी जनसंख्या हिंदी में संवाद करती है, तो यह आवश्यक हो जाता है कि विज्ञान और तकनीक से संबंधित ज्ञान भी इसी भाषा में उपलब्ध हो। हिंदी को विज्ञान की समृद्ध भाषा बनाना आवश्यक है, क्योंकि यह समाज के समग्र विकास के लिए अनिवार्य है। इससे न केवल भाषा का विकास होगा, बल्कि आम जनता को विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। प्रौद्योगिकी हिंदी को विज्ञान और साथ ही तकनीक की उन्नत भाषा बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। डिजिटल मीडिया के माध्यम से हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी सामग्री को व्यापक रूप से प्रसारित किया जा सकता है। अनुवाद साफ्टवेयर और भाषा पहचान तकनीक भी इस दिशा में मददगार साबित हो रहे हैं। इसके अलावा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग से भाषाई बाधाओं को दूर किया जा सकता है और जटिल तकनीकी सामग्री को हिंदी में सुलभ बनाया जा सकता है।

हिंदी विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। भारत के अलावा नेपाल, फिजी, मारीशस, गुयाना और त्रिनिदाद आदि देशों में भी इसका प्रयोग होता है, लेकिन भारत की राजभाषा घोषित होने के 75 साल बाद भी हिंदी अभी तक संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा नहीं बन पाई है। हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने के लिए भारत को अन्य देशों से सहयोग और समर्थन प्राप्त करना होगा, विशेषकर उन देशों से जहां हिंदी का उपयोग होता है। हाल के वर्षों में भारत सरकार ने हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाने की दिशा में कई कदम उठाए हैं। प्रधानमंत्री मोदी और विदेश मंत्रालय ने कई बार इस मुद्दे को उठाया और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया। भविष्य में हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए भारत को और भी कूटनीतिक प्रयास करने होंगे। इसके लिए वित्तीय सहयोग के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय समर्थन भी आवश्यक है। यदि भारत अन्य हिंदी भाषी देशों और वैश्विक शक्तियों का समर्थन जुटा पाने में सफल होता है तो यह संभव है कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं में स्थान मिल सके।

हिंदी को राजभाषा के रूप में पूरी तरह स्थापित करने में अभी भी कई चुनौतियां हैं, लेकिन यह निश्चित है कि हिंदी अपने सशक्त साहित्य, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और बढ़ते डिजिटल माध्यमों के साथ भविष्य में और अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल एजुकेशनल स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट – 152107 पंजाब

यीडा की 361 आवासीय भूखंड योजना पर आया अपडेट, ड्रॉ में इन लोगों का नाम आने की संभावना अधिक

यमुना प्राधिकरण ने आवासीय भूखंड योजना का ड्रा निकालने के लिए कार्यक्रम की जगह तय कर ली है। बता दें इंडिया एक्सपो मार्ट में आगामी 10 अक्टूबर को सुबह 10 बजे से ड्रा प्रक्रिया शुरू होगी। योजना के तहत दो लाख से ज्यादा लोगों ने घर के लिए रजिस्ट्रेशन किया है। गौरतलब है कि यमुना प्राधिकरण ने 361 आवासीय भूखंडों की योजना निकाली थी।

ग्रेटर नोएडा। यमुना प्राधिकरण ने आवासीय भूखंड योजना का ड्रा करने के लिए इंडिया एक्सपो मार्ट को चुना है। 10 अक्टूबर को सुबह 10 बजे से ड्रा प्रक्रिया शुरू होकर अंतिम भूखंड के आवंटन तक जारी रहेगी। आवेदकों की अधिक संख्या को देखते हुए प्राधिकरण ने यह निर्णय लिया है।

ड्रा प्रक्रिया की निगरानी के लिए नियुक्त जूरी में हाई कोर्ट के सेवानिवृत न्यायाधीश के अतिरिक्त दो सेवानिवृत आइएएस अधिकारी होंगे। तैयारी के लिए ओएसडी की अध्यक्षता में चार सदस्यीय समिति गठित की गई है।

यीडा ने निकाली थी 361 आवासीय भूखंड योजना

यमुना प्राधिकरण ने पांच जुलाई को 361 आवासीय भूखंडों की योजना निकाली थी। योजना में अब तक के सबसे अधिक 2,02,822 आवेदन मिले हैं। प्रक्रिया की पारदर्शिता कायम रखने के लिए दूरदर्शन पर इसके सीधे प्रसारण के प्रयास किए जा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त इंटरनेट मीडिया के अन्य प्लेटफार्म पर भी इसका सजीव प्रसारण होगा। सीईओ डा. अरुणवीर सिंह ने दावा किया है कि ड्रा प्रक्रिया संपन्न होने के 72 घंटों के अंदर असफल आवेदकों की पंजीकरण राशि उनके खाते में लौटा दी जाएगी।

ड्रा में शामिल होने के लिए आवेदकों की पात्रता की जानकारी के लिए उनकी सूची प्राधिकरण की वेबसाइट पर जल्द अपलोड की जाएगी। आवेदन अपनी आवेदन संख्या के जरिये जान सकेंगे कि उन्हें ड्रा में शामिल होने का मौका मिलेगा या नहीं।

एक मुश्त भुगतान वालों को ही ड्रा में शामिल होने का मिलेगा मौका

योजना में 361 भूखंडों के सापेक्ष मिले आवेदन में एक मुश्त भुगतान का विकल्प चुनने वालों की संख्या काफी अधिक है। इसलिए ड्रा में उन्हें ही शामिल होने का मौका मिलेगा। किस्तों में भुगतान का विकल्प चुनने वालों को ड्रा में शामिल होने की संभावना लगभग नहीं है।

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV Drive the Future

टाटा पंच को मिलेंगे शानदार नए फीचर्स; पहले से ज्यादा हो जाएगी लग्जरी

परिवहन विशेष न्यूज

टाटा मोटर्स अपनी सबसे ज्यादा बिकने वाली गाड़ी में से एक Tata Punch के अपडेटेड मॉडल को लाने की तैयारी कर रही है। हाल ही में इसके टेस्टिंग मॉडल को स्पॉट किया गया है। वहीं इसका एक ब्रोशर सामने आया है जिसमें इसके कई वेरिएंट को नए फीचर्स मिलने की बात सामने आई है। आइए जानते हैं कि Tata Punch के किस वेरिएंट में क्या फीचर्स मिलेंगे।

नई दिल्ली। टाटा पंच का नया ब्रोशर सामने आया है, जिसमें यह पता चल रहा है कि कंपनी इसे नए फीचर्स मिलने वाले हैं। वहीं, यह टाटा की सबसे ज्यादा बिकने वाली गाड़ी में से एक है। जिसे देखते हुए कंपनी इसे लगातार अपडेट करके ज्यादा बेहतर करती जा रही है। हम यहां पर आपको नई Tata Punch किन फीचर्स के साथ आएगी, बता रहे हैं। आइए जानते हैं।

2024 Tata Punch: प्योर वेरिएंट

इसके प्योर वेरिएंट में डुअल एयरबैग, इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी प्रोग्राम (ESP), रियर पार्किंग सेंसर, ISOFIX चाइल्ड सीट प्रोविजन, चाबी के साथ सेंट्रल लॉकिंग, फ्रंट पावर विंडो, टिल्ट स्टीयरिंग, 90-डिग्री डोर ओपनिंग, रियर फ्लैट फ्लोर, ORVM पर LED इंडिकेटर, ब्लैक ODH और ORVM, 4-इंच डिजिटल क्लस्टर, डोर-व्हील आर्क और सिल क्लैडिंग, आइडल स्टार्ट स्टॉप (ISS) तकनीक (पेट्रोल) जैसे फीचर्स मिलेंगे।

2024 Tata Punch: प्योर (O) वैरिएंट

टाटा पंच के इस वेरिएंट में प्योर के सभी फीचर्स मिलेंगे। इसके साथ ही यह फ्लिप की के साथ सेंट्रल रिमोट लॉकिंग, इलेक्ट्रिकल एडजस्टमेंट के साथ ORVM, फुल व्हील कवर जैसे फीचर्स के साथ आएगी।

2024 Tata Punch: एडवेंचर वैरिएंट

इसमें भी टाटा पंच प्योर वेरिएंट वाले सभी फीचर्स मिलेंगे। इसके अलावा यह फ्लोटिंग 8.89 cm इंफोटेनमेंट सिस्टम, 4 स्पीकर, स्टीयरिंग माउंटेड कंट्रोल, सभी पावर विंडो, फ्लिप की के साथ सेंट्रल रिमोट लॉकिंग, एंटी-ग्लेयर IRVM, USB चार्जिंग पोर्ट, इलेक्ट्रिकल एडजस्टमेंट के साथ ORVM, पार्सल ट्रे, फॉलो-मी-होम हेडलैंप, फुल व्हील कवर, बॉडी-कलर्ड ORVM और ODH जैसे फीचर्स के साथ आएगी।

2024 Tata Punch: एडवेंचर रिदम वैरिएंट

टाटा पंच एडवेंचर रिदम वैरिएंट में एडवेंचर के सभी फीचर्स मिलेंगे। इसके साथ यह फ्लोटिंग 17.78 सेमी टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट, 2 ट्वीटर, वायर्ड एंड्रॉइड ऑटो और ऐपल कारप्ले, रिवर्स पार्किंग कैमरा जैसे फीचर्स से लैस होगी।

2024 Tata Punch: एडवेंचर सनरूफ वैरिएंट

टाटा पंच के इस वेरिएंट में भी एडवेंचर वाले सभी फीचर्स मिलेंगे। इसके अलावा, इसमें इलेक्ट्रिक सनरूफ, आर्मरेस्ट के साथ ग्रैंड कंसोल, रियर एसी वेंट, ऑटो हेडलैंप, रेन-सेंसिंग वाइपर, ड्राइवर सीट हाइट एडजस्टमेंट, रूफ रेल, शार्क फिन एंटीना, रियर ए-टाइप यूएसबी पोर्ट जैसे फीचर्स मिलेंगे।

ईवी, हाइब्रिड, प्लग-इन-हाइब्रिड भारत के स्वच्छ ऊर्जा ऑटो क्षेत्र को आगे बढ़ाएंगे: रिपोर्ट

परिवहन विशेष न्यूज

एलारा सिक्योरिटीज की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत के ऑटोमोबाइल क्षेत्र का ईवी की ओर रुख केवल इलेक्ट्रिक वाहनों पर ही निर्भर नहीं होगा बल्कि इसमें हाइब्रिड और प्लग-इन हाइब्रिड भी शामिल होंगे। रिपोर्ट में कहा गया है कि इलेक्ट्रिक वाहनों, हाइब्रिड और प्लग-इन हाइब्रिड का संयोजन देश को केवल इलेक्ट्रिक मोबिलिटी पर निर्भर रहने के बजाय स्वच्छ ऊर्जा समाधानों की ओर ले जाएगा।

रिपोर्ट के अनुसार भारतीय ईवी बाजार में जबरदस्त वृद्धि देखी गई है। 2023 में वैश्विक ईवी बिक्री 14 मिलियन तक पहुंच गई, जिसमें भारत में 90 प्रतिशत की वृद्धि दर देखी गई। 2030 तक भारत सरकार का लक्ष्य 30 प्रतिशत ईवी पैठ हासिल करना है, जिसमें विस्तारित चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर, उन्नत बैटरी प्रबंधन प्रणाली और नए ईवी मॉडल जारी करने जैसे प्रमुख सक्षमकर्ता महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

जेएसडब्लू एमजी मोटर इंडिया के चीफ ग्रोथ ऑफिसर गौरव गुप्ता के अनुसार अगले 5-6 सालों में लगभग 200,000 चार्जर की आवश्यकता होगी, जिसमें हर 50 वाहनों के लिए 1 चार्जर होगा। CY30 तक कनेक्टेड कार अपनाने की दर 75-80 प्रतिशत तक पहुँचने की उम्मीद है और ADAS अपनाने की दर 45 प्रतिशत तक पहुँचनी चाहिए, जिससे बैटरी इलेक्ट्रिक व्हीकल अधिग्रहण अधिक आकर्षक हो जाएगा।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि भारतीय ऑटोमोटिव क्षेत्र के भविष्य को आकार देने वाले प्रमुख रुझानों में से एक सॉफ़्टवेयर-परिभाषित वाहनों SDV का उदय है। ये वाहन इलेक्ट्रॉनिक्स, सॉफ़्टवेयर और इलेक्ट्रिकल आर्किटेक्चर को एकीकृत सिस्टम में एकीकृत करने पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं। इसमें कहा गया है कि ऐसे वाहन उन्नत सुविधाएँ और सेवाएँ प्रदान करते हैं जिनका मुद्रीकरण किया जा सकता है, जिससे ओईएम को अपने व्यवसाय मॉडल को हार्डवेयर-केंद्रित से सॉफ़्टवेयर और स्मार्ट समाधान-संचालित संचालन में बदलने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

ऑटोमोबिलिटी के पार्टनर और सह-संस्थापक बेविन जैकब ने कहा कि ओईएम अत्याधुनिक तकनीक को शामिल करके और उपभोक्ताओं को कनेक्टेड सेवाएँ प्रदान करके स्मार्ट समाधानों से मूल्य निकाल रहे हैं। उन्होंने कहा, ऑन-डिमांड मोबिलिटी सेवाएं, जो इंटरनेट कनेक्टिविटी, विद्युतीकरण, स्वायत्त ड्राइविंग और मोबिलिटी-एज़-ए-सर्विस द्वारा संचालित हैं, उद्योग के भविष्य के लिए एक परिवर्तनकारी विकास का प्रतिनिधित्व करती हैं। रिपोर्ट के अनुसार भारत का ऑटोमोटिव क्षेत्र तकनीकी प्रगति, सहयोगी प्रयासों और संधारणीय गतिशीलता की ओर एक मजबूत कदम से प्रेरित एक नाटकीय बदलाव के लिए तैयार है। स्वच्छ ऊर्जा में परिवर्तन बहुआयामी होगा, जिसमें ईवी, हाइब्रिड और प्लग-इन हाइब्रिड अग्रणी होंगे, जिन्हें स्थानीय उत्पादन और स्मार्ट समाधानों के एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र द्वारा समर्थित किया जाएगा।

यूरोपीय संघ चीनी इलेक्ट्रिक वाहनों पर टैरिफ के लिए करा सकता है मतदान, 25 सितंबर को होगी वोटिंग!

परिवहन विशेष न्यूज

यूरोपीय संघ (EU) (ईयू) चीन से आयात किए गए इलेक्ट्रिक वाहनों पर निश्चित टैरिफ (शुल्क) लगाने के लिए 25 सितंबर को एक मतदान करने का लक्ष्य बना रहा है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक योजना से परिचित लोगों ने यह जानकारी दी है।

मतदान नवंबर से शुल्क लागू करने का मार्ग प्रशस्त करेगा। जब तक कि एक योग्य बहुमत - यूरोपीय संघ की 65% आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाले 15 सदस्य देश - इस कदम का विरोध नहीं करते। नाम न बताने की शर्त पर बात करने वाले लोगों ने कहा कि मतदान की तारीख अभी भी बदल सकती है।

यूरोपीय संघ ने SAIC मोटर कॉर्प, Volvo Car AB (वोल्वो कार एबी) की मालिक Geely (गीली) और BYD (बीवाईडी) कंपनी पर क्रमशः 36.3%, 19.3% और 17% टैरिफ लगाने का प्रस्ताव रखा है। जो चीन के निर्यातकों पर पहले से लागू 10% टैरिफ के अतिरिक्त है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, इन दरों में थोड़ा संशोधन करके इसे कम किया जा सकता है। टेस्ला इंक को बेस ड्यूटी के अलावा 8% से थोड़ी कम दर का अतिरिक्त शुल्क देना होगा।

यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने पिछले साल ईवी जांच शुरू की थी। जिसमें कहा गया था कि चीनी कंपनियां सरकारी सब्सिडी से अनुचित लाभ उठा रही हैं और यूरोप के बाजारों को अतिरिक्त उत्पादन से भर रहे हैं। इसके जवाब में, बीजिंग ने ब्रांडी, डेयरी और पोर्क उत्पादों के यूरोपीय संघ के निर्यात में एंटी-डंपिंग जांच शुरू की।

चीन और यूरोपीय संघ टैरिफ के विकल्प तलाशने के लिए बातचीत कर रहे हैं, लेकिन अभी तक ये बातचीत सफल नहीं हुई है। ब्रुसेल्स के लिए, किसी भी समाधान को विश्व व्यापार संगठन के नियमों के आधार पर होना चाहिए। और यूरोपीय संघ की जांच में पहचानी गई अंतर्निहित हानिकारक सब्सिडी को संबोधित करना चाहिए।

चर्चा अगले सप्ताह जारी रहेगी जब चीनी वाणिज्य मंत्री वांग वेनताओ यूरोपीय संघ के व्यापार प्रमुख वाल्डिस डोम्ब्रोव्स्की से मिलने के लिए यूरोप का दौरा करेंगे।

चीन का दावा है कि ये उपाय संरक्षणवादी हैं और उसने कई क्षेत्रों पर अपने शुल्क लगाकर जवाबी कार्रवाई करने की धमकी दी है। साथ ही वह सभी विवादों को एक पैकेज के रूप में हल करने के लिए एक समझौते की मांग कर रहा है। बीजिंग WTO में भी इन उपायों को चुनौती दे रहा है। लोगों ने कहा कि यूरोपीय संघ चीनी जांच को प्रतिशोध के रूप में देखता है और तीनों जांचों में अपने हितों की रक्षा करने का इरादा रखता है।

स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज ने इस सप्ताह की शुरुआत में चीन की यात्रा के दौरान यह कहकर लोगों को चौंका दिया था कि यूरोपीय संघ को टैरिफ लगाने की अपनी योजना पर फिर से विचार करना चाहिए। जर्मनी भी ब्रुसेल्स पर शुल्कों का विकल्प खोजने के लिए दबाव डाल रहा है। क्योंकि उसके ऑटो उद्योग ने इन उपायों के बारे में चिंता व्यक्त की है।

जर्मनी और स्पेन दोनों के पास एक दूसरे पर प्रतिबंधों के चक्र से बचने के लिए बड़े पैमाने पर वित्तीय प्रोत्साहन हैं। फॉक्सवैगन एजी और बीएमडब्ल्यू एजी सहित जर्मन वाहन निर्माता कंपनियों को व्यापार विवाद में सबसे ज्यादा नुकसान होगा। क्योंकि उन्होंने 2022 में सामूहिक रूप से वहां 4.6 मिलियन कारें बेचीं।

शुरूआत करें आज से भविष्योन्मुखी व्यवसाय

परिवहन विशेष न्यूज

दुनिया तेजी से बदल रही है। इसके साथ ही लोगों की मांग भी बदल रही है। इसे पूरा करने के लिए कई नए बिजनेस मॉडल बाजार में आ रहे हैं। अगर आप भी किसी नए बिजनेस आइडिया की तलाश में हैं तो आज हम आपको ऐसे बिजनेस के बारे में बता रहे हैं जो पूरी तरह से भविष्य की मांग पर आधारित हैं। अगर आप इन भविष्योन्मुखी व्यवसाय को शुरू करते हैं तो आप न सिर्फ सफल होंगे बल्कि बंपर मुनाफा भी कमाएंगे।

माइक्रो मोबिलिटी : माइक्रो मोबिलिटी हम में से कई लोगों के लिए एक नया शब्द है लेकिन यह बेस्ट फ्यूचर बिज़नेस आइडियाज में से एक है। माइक्रो मोबिलिटी का मतलब कम्प्यूटेशन के लिए कम गति से चलने वाले हल्के वाहनों का उपयोग करना है। जैसा कि हम जानते हैं कि ट्रैफिक के कारण हमें बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। बढ़ते यातायात के समाधानों में से एक माइक्रो मोबिलिटी है। माइक्रो मोबिलिटी में ई-बाइक, इलेक्ट्रिक स्कूटर, स्केटबोर्ड, इलेक्ट्रिकल पेडल साइकिल का इस्तेमाल किया जाता है। यह शहरी परिवहन का भविष्य है। माइक्रो मोबिलिटी से जुड़े बिज़नेस के अवसर नीचे दिए गए हैं।

माइक्रो मोबिलिटी रेंटल बिजनेस

सूक्ष्म गतिशीलता वाहन विकास और बिक्री

माइक्रो-मोबिलिटी वाहन साझा करने के लिए ऐप और प्लेटफॉर्म विकास

माइक्रो मोबिलिटी वाहन की जीपीएस आधारित ट्रैकिंग

इलेक्ट्रिक वाहन : इलेक्ट्रिक वाहन एक हकीकत बनने जा रही है। यह कई लोगों के लिए बिज़नेस के नए विकल्प खोलेगा। यह उम्मीद की जाती है कि एक इलेक्ट्रिक व्हीकल भविष्य का वाहन बन जाएगी। फ्यूचर बिज़नेस आइडियाज की रेस में आप इलेक्ट्रिक वाहन को भी गिन सकते हो, इसकी लोकप्रियता का मुख्य कारण इसका टिकाऊ होना और पर्यावरणीय स्थिरता हैं। इलेक्ट्रिक वाहन लॉन्च होने के बाद हमारे पास बिजनेस के कई नए मौके होंगे, जैसे –

इलेक्ट्रिक वाहन सर्विस गैरेज

इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन सेटअप

स्पेयर पार्ट्स का निर्माण/बिक्री

बैटरी स्वैप और स्क्रैपिंग

ईवी चार्जिंग स्टेशन : देश में इलेक्ट्रिक बाइक, स्कूटर और कारों की बिक्री लगातार बढ़ रही है। बाजार में बढ़ती मांग और बदलते ट्रेंड को देखते हुए ऑटो कंपनियां भी ईवी पर अपना फोकस बढ़ा रही हैं। अब जबकि इलेक्ट्रिक वाहनों का चलन बढ़ रहा है, तो इसे पूरा करने के लिए चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरत होगी। इस मौके का फायदा उठाते हुए आप चार्जिंग स्टेशन का बिजनेस शुरू कर सकते हैं। इसके लिए आपको अच्छी लोकेशन पर जगह की जरूरत होगी। कई कंपनियां चार्जिंग स्टेशन लगाने में मदद कर रही हैं। आप कंपनियों से गठजोड़ करके आसानी से यह बिजनेस शुरू कर सकते हैं। इससे आने वाले समय में अच्छी कमाई होगी।

वाहन धुलाई और सर्विसिंग का व्यवसाय : आज हर गली-मोहल्ले में वाहनों की धुलाई और सर्विसिंग का व्यवसाय भी बहुत तेजी से चल रहा है। वर्तमान समय में जिस तरह से वाहनों का उपयोग हो रहा है, भविष्य में इसमें और भी बढ़ोतरी होगी। भविष्य में वाहनों का स्वरूप भी बदलेगा और गैस और अन्य सीएनजी के साथ-साथ ईंधन की जगह बायो फ्यूल और इलेक्ट्रिक चार्जिंग का भी उपयोग किया जाएगा। इसके बारे में आपको और अधिक जानकारी प्राप्त करने की जरूरत है, आपको इसकी तकनीक सीखने की जरूरत है। जब आप इसकी नई तकनीकों के बारे में जानेंगे, तो आप इसका व्यवसाय और भी बेहतर तरीके से कर सकते हैं। कार सर्विसिंग में केवल कार धोने से ही 200 से 300 रुपये की कमाई हो सकती है और अगर एक या दो नट बोल्ट भी टाइट करवाने पड़े, तो बिल और भी बढ़ जाता है। इसमें लागत कम और कमाई ज्यादा होती है, बस आपको इसके बारे में सही जानकारी होनी चाहिए।

सोलर पैनल बिजनेस : जब बेस्ट बिजनेस आइडिया की बात आती है तो सोलर पैनल का जिक्र होना स्वाभाविक है। सोलर पैनल बिजनेस आज के दौर में बढ़ती ऊर्जा जरूरतों को ध्यान में रखते हुए सरकार अक्षय ऊर्जा को बढ़ावा दे रही है। प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन आदि को कम करने के लिए सौर ऊर्जा के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जा रहा है। देश में बिजली का संकट बढ़ता जा रहा है। जितनी बिजली की मांग है, उतनी बिजली का उत्पादन नहीं हो रहा है। ऐसे में सौर ऊर्जा के इस्तेमाल से इन समस्याओं से निजात मिल सकती है। सरकार सौर ऊर्जा को बढ़ावा दे रही है। ऐसे में यह बिजनेस काफी फायदेमंद है। आने वाले समय में सौर ऊर्जा पर निर्भरता बढ़ेगी। जिस तरह से बिजली की कमी है, बिजली के दाम बढ़ रहे हैं, लोग सौर ऊर्जा की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। इस बिजनेस में जोखिम लगभग नहीं है और भविष्य में यह बिजनेस काफी बढ़ेगा। इसलिए इस बिजनेस को करके आप अपना खुद का एक अच्छा बिजनेस शुरू कर सकते हैं। इस व्यवसाय में जोखिम न के बराबर है और भविष्य में यह व्यवसाय बहुत बढ़ेगा और जिस तरह से हमारे देश की जनसंख्या बढ़ रही है, हर परिवार को बिजली उपलब्ध कराना सरकार के लिए किसी चुनौती से कम नहीं है। ऐसे में सोलर पैनल सबसे अहम भूमिका निभाएगा। अगर आप कोई बड़ा व्यवसाय करने के इच्छुक हैं तो सोलर पैनल सबसे अच्छा विकल्प है क्योंकि आने वाले समय में इसकी मांग तेजी से बढ़ने वाली है और अगर आप यह व्यवसाय करते हैं तो आपको सरकार की तरफ से भी पूरा सहयोग प्रदान किया जाता है।

जैव ईंधन उत्पादन : जैव ईंधन भविष्य का उत्पाद है इसलिए यह बेस्ट फ्यूचर बिज़नेस आइडियाज में से एक है। जैव ईंधन का उत्पादन रासायनिक प्रतिक्रियाओं का उपयोग करके बायोमास का उपयोग करके किया जाता है। जैव ईंधन टिकाऊ ईंधन है। जैव ईंधन का उपयोग वाहन में बायो-डीजल के साथ-साथ औद्योगिक अनुप्रयोगों में भी किया जा सकता है। जैव ईंधन उत्पादन एक आशाजनक बिज़नेस विकल्प है।

यदि आपके पास विशेषज्ञता है तो आप जैव ईंधन उत्पादन का बिज़नेस शुरू कर सकते हैं और अपने फ्यूचर बिज़नेस आइडियाज के बारे में प्लान करके इस बिज़नेस को आगे बढ़ा सकते हैं।

भविष्य के व्यावसायिक विचारों की सूची अंतहीन है और यह और भी लंबी हो सकती है। हालांकि, हमने आने वाले वर्षों के लिए सबसे अच्छे भविष्य के व्यावसायिक विचारों को शामिल किया है।

असम में प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करेगी डसॉल्ट, 240 करोड़ रुपये का करेगी निवेश : हिमंत बिस्वा सरमा

परिवहन विशेष न्यूज

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने कहा कि पेरिस स्थित डसॉल्ट समूह की प्रौद्योगिकी शाखा डसॉल्ट सिस्टम्स असम में एयरोस्पेस और रक्षा ऑटोमोटिव इलेक्ट्रिक वाहन प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करेगी। इस परियोजना पर 240 करोड़ का निवेश किया जाएगा।

सरमा ने गुवाहाटी में मीडियाकर्मियों से बात करते हुए कहा, ₹असम कैबिनेट की बैठक ने इस परियोजना को मंजूरी दे दी है जिसके तहत डसॉल्ट की एक कंपनी जो राफेल विमान, 3डी प्रिंटिंग और नई पीढ़ी की तकनीक पर काम करती है, असम में एयरोस्पेस और रक्षा ऑटोमोटिव इलेक्ट्रिक वाहन प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करेगी।₹ उन्होंने कहा कि इसके माध्यम से असम के युवाओं को विमानन उद्योग, रक्षा, एयरोस्पेस, ऑटोमोटिव इलेक्ट्रिक वाहन इंजीनियरिंग में काम करने के लिए आकर्षित किया जाएगा। यह परियोजना 240 करोड़ रुपये की होगी, जिसमें कंपनी करीब 200 करोड़ रुपये का निवेश करेगी और राज्य सरकार 40 करोड़ रुपये का निवेश करेगी।

सरमा ने शुक्रवार को गुवाहाटी में मीडियाकर्मियों से बात करते हुए कहा, "असम कैबिनेट की बैठक ने इस परियोजना को मंजूरी दे दी है जिसके तहत डसॉल्ट की एक कंपनी जो राफेल विमान, 3डी प्रिंटिंग और नई पीढ़ी की तकनीक पर काम करती है, असम में एयरोस्पेस और रक्षा ऑटोमोटिव इलेक्ट्रिक वाहन प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करेगी।" उन्होंने कहा कि इसके माध्यम से असम के युवाओं को विमानन उद्योग, रक्षा, एयरोस्पेस, ऑटोमोटिव इलेक्ट्रिक वाहन इंजीनियरिंग में काम करने के लिए आकर्षित किया जाएगा। यह परियोजना 240 करोड़ रुपये की होगी, जिसमें कंपनी करीब 200 करोड़ रुपये का निवेश करेगी और राज्य सरकार 40 करोड़ रुपये का निवेश करेगी।

उन्होंने कहा कि इससे पहले राज्य सरकार ने टाटा के साथ मिलकर इसी तरह की परियोजनाएं की हैं और राज्य के पॉलिटेक्निक में भी यह परियोजना चल रही है। उन्होंने कहा, "गुवाहाटी इंजीनियरिंग कॉलेज में एक उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किया जाएगा। यह हब होगा। यहां से असम के करीब 50 कॉलेजों को स्पोक मॉडल के जरिए प्रशिक्षित किया जाएगा।"

उन्होंने कहा, "कंपनी एआई, रोबोटिक्स, रक्षा, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर काम करती है और दुनिया में एक अग्रणी प्रौद्योगिकी संगठन है।"

महिंद्रा एक्सयूवी 3XO का वेटिंग पीरियड बढ़ा, डिमांड इतनी कि करना पड़ रहा आधे साल तक इंतजार

महिंद्रा एक्सयूवी 3XO की डिमांड इसके दोबारा लॉन्च होने के बाद से बढ़ी है। इसकी डिमांड इतनी ज्यादा बढ़ गई है कि लोगों को इसकी डिलिवरी के लिए आधा साल तक का इंतजार करना पड़ रहा है। इसके बेस वेरिएंट की वेटिंग पीरियड 6 महीने तक का है। XUV 3XO की कीमत 7.49 लाख रुपये से लेकर 15.49 लाख रुपये के बीच है।

नई दिल्ली। अप्रैल में XUV300 के फेसलिफ्ट XUV 3XO को लॉन्च होने के बाद से इसकी डिमांड पहले से ज्यादा बढ़ गई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, इसकी हर महीने 9,000-10,000 यूनिट प्रति महीने बिक्री हो रही है, जो अपडेट मिलने से पहले करीब 4,000 यूनिट थी। इसकी बुकिंग को लेकर अब हाल यह है को लोगों को इस गाड़ी की डिलीवरी के लिए आधे साल तक का इंतजार करना पड़ रहा है। आइए जानते हैं कि Mahindra XUV 3XO के किस वेरिएंट के लिए कितना इंतजार करना पड़ रहा है।

Mahindra XUV 3XO: कितना वेटिंग पीरियड

महिंद्रा XUV 3XO के बेस MX1 पेट्रोल वेरिएंट का वेटिंग पीरियड सबसे ज्यादा 6 महीने तक का है। वहीं, इसके उच्च-स्पेक AX5 L, AX7 और AX7 L पेट्रोल वेरिएंट पर करीब दो से तीन महीने का वेटिंग पीरियड है। इसके मिड-स्पेक AX5 ट्रिम का वेटिंग पीरियड चार महीने तक है। महिंद्रा XUV 3XO के सभी वेरिएंट का वेटिंग पीरियड एक महीने तक के लिए है।

Mahindra XUV 3XO: इंजन ऑप्शन

महिंद्रा XUV 3XO में कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें डुअल-ज़ोन क्लाइमेट कंट्रोल, लेवल 2 ADAS तकनीक और पैनोरमिक सनरूफ भी दिया गया है। यह तीन इंजन ऑप्शन के साथ आती है, जो 1.2-लीटर टर्बो-पेट्रोल, 1.2-लीटर डायरेक्ट इंजेक्शन टर्बो-पेट्रोल और 1.5-लीटर डीजल है। इसके पेट्रोल वाले इंजन को 6-स्पीड मैनुअल और 6-स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। वहीं डीजल इंजन को मैनुअल और 6-स्पीड AMT ऑप्शन मिलता है।

Mahindra XUV 3XO: कीमत

महिंद्रा XUV 3XO की एक्स-शोरूम कीमत 7.49 लाख रुपये से 15.49 लाख रुपये तक है। यह नौ ट्रिम में आती है।

कृषि निर्यात बढ़ाने का मार्ग

विजय गर्ग

समस्या की जड़ तक कोई भी राजनीतिक दल और सरकारें नहीं जाना चाहती। ऐसा नहीं है कि समस्याओं का स्थायी समाधान नहीं हो सकता, किन्तु वहां तक पहुंचने और व्यावहारिक समाधान ढूंढने में पापड़ बेलने पड़ते हैं। पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार ने महिला चिकित्सक से बलात्कार के बाद हत्या के मामले में वही किया है जो अब तक ऐसे मामलों में दूसरे राज्य या केंद्र सरकार करती रही हैं।

खेत से खाने की मेज तक सप्लाई श्रृंखला को गतिदेकर, वैश्विक व भारतीय खाद्य क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा दे कर तथा खेतों पर ही खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को बढ़ावा दे कर किसानों को बेहतर मुनाफा सुनिश्चित करने के साथ ही फसल कटने के बाद होने वाले नुकसानों से बचा जा सकता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय इस दिशा में नेतृत्वकारी भूमिका अदा करते हुए नई दिल्ली में 19-22 सितंबर तक 'वर्ड फूड इंडिया' का आयोजन कर रहा है। इसके साथ ही 2024-25 के केन्द्रीय बजट में कृषि क्षेत्र विकास के लिए 1.52 लाख करोड़ रुपये का प्राविधान किया गया है। इस फंडिंग के माध्यम से जलवायु समस्याओं से निपटने तथा उत्पादकता, खोज एवं प्रसंस्कृत खाद्य निर्याता को बढ़ावा देने पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा।

यह कृषि उत्पादों का निर्यात बढ़ाने के लिए जरूरी है जिसमें 8 प्रतिशत गिरावट आई है। यह 2022-23 में 53.52 बिलियन डालर से घट कर 2023-24 में 48.9 बिलियन डालर रह गया। 2014-23 के बीच कृषि निर्यात औसतन केवल 2 प्रतिशत वार्षिक की गति से बढ़े। उल्लेखनीय है कि पांच उत्पाद चावल, गेहूं, मांस, मसाले, चीनी तथ चाय काफी का हिस्सा कुल कृषि उत्पाद निर्यात में 50 प्रतिशत से अधिक है। कभी-कभी घरेलू मांग पूरी करने तथा मुद्रास्फीति पर नियंत्रण के लिए निर्यात पर नियंत्रण लगाना पड़ता है। हमारे कृषि निर्यातों का केवल प्रतिशत प्रसंस्कृत या मूल्य- संवर्धित है। पिछले दशक में इस आंकड़े में लगभग कोई परिवर्तन नहीं आया है। हालांकि, ज्यादा टेक-आधारित आपरेशनल आकार और उत्पादन क्षमता तथा विश्व बाजार में अंतरराष्ट्रीय मानक पूरा करने को देखते हुए यह काफी है। लेकिन 111 बिलियन प्रसंस्कृत खाद्य एवं पेय पदार्थों के निर्यातक स्विटजरलैंड की 'नेस्ले' जैसी कंपनियों की सफलता को देखते हुए स्पष्ट होता है कि तकनीक और शोध के प्रयोग से क्या संभव हो सकता है। 9 बिलियन डालर टर्नओवर वाली उल्लेखनीय भारतीय घरेलू प्रसंस्कृत कृषि उत्पाद बेचने वाली 'अमूल' आपरेशनल क्षमता, उत्पादन क्षमता तथा अंतरराष्ट्रीय मानक पूरा करने के मामले में नेस्ले से बहुत पीछे है। इसके बावजूद समुचित समर्थन और दृष्टिकोण के चलते वह भी ऐसी ही सफलता प्राप्त कर सकती है। प्रसंस्कृत कृषि उत्पादों का निर्यात लगभग 1 ट्रिलियन डालर वार्षिक है जिसमें 63 बिलियन डालर के साथ जर्मनी सर्वोच्च स्थान पर है। इसके बाद 58 बिलियन डालर के साथ अमेरिका, 57 बिलियन डालर के साथ नीदरलैंड, 53 बिलियन डालर के साथ चीन तथा 50 बिलियन डालर के साथ फ्रांस का स्थान है। दक्षिणपूर्व एशिया में इंडोनेशिया, मलेशिया और थाईलैंड प्रसंस्कृत कृषि उत्पादों के बड़े निर्यातक हैं।

हालांकि, मूल्य संवर्धित कृषि उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने वाली कृषि- निर्यात नीति लागू होने के बाद पिछले पांच साल में भारत के मूल्य-संवर्धित निर्यात में 6.5 बिलियन डालर की वृद्धि हुई है और यह कुल 15 बिलियन डालर तक पहुंच गया है। लेकिन इसके बावजूद इससे वैश्विक रैंक में मामूली सुधार ही हुआ है और हम 21वें स्थान से ऊपर उठ कर 17वें स्थान पर पहुंच सके हैं। इस स्थिति में निश्चित रूप से सुधार हो सकता है। 2023-24 के आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया है कि भारत दुनिया में फलों और सब्जियों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। 300 मिलियन टन उत्पादन के साथ यह चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। लेकिन भारत में प्रसंस्करण स्तर बहुत कम है। यह फलों के लिए 4.5 प्रतिशत, सब्जियों के लिए 2.7 प्रतिशत, दूध लिए 21.1 प्रतिशत, मांस के लिए 34.2 प्रतिशत और मछलियों के लिए 15.4 प्रतिशत है। इसकी तुलना में चीन में प्रसंस्करण 25-30 प्रतिशत तथा पश्चिमी देशों में 60-80 प्रतिशत है।

प्रसंस्करण क्षमता में इस कमी के कारण भारत में उत्पाद का काफी हिस्सा बेकार चला जाता है। अनुमान है कि देश में फसल कटाई के बाद बरबादी का स्तर पूरी सप्लाई श्रृंखला में 18 से 25 प्रतिशत के बीच है, हालांकि फलों और सब्जियों के मामले में यह लगभग 45 प्रतिशत है नीति आयोग का अनुमान है कि फसल कटाई के बाद लगभग 90,000 करोड़ रुपये की बरबादी होती है। इस स्थिति में सुधार के लिए खेतों पर ही समुचित छंटाई और ग्रेडिंग तथा प्रसंस्करण बढ़ाने की आवश्यकता अनुभव की जाती है। कृषि प्रोत्साहनों में परिवर्तन कर किसानों को इस बात के लिए प्रेरित करना जरूरी हैं कि वे खेतों तथा उसके निकट बरबादी रोकने के प्रयास करें।

2020 में केन्द्र सरकार ने एक ट्रिलियन रुपये के कृषि ढांचागत फंड की घोषणा की थी ताकि कोल्ड चेन श्रृंखला - तथा फसल कटाई के बाद प्रबंधन ढांचा खेतों तथा फसल संग्रह केन्द्रों पर बनाने के लिए मध्यम से दीर्घकालीन अवधि की कर्ज फाइनेंसिंग की जा सके। तमिलनाडु द्वारा हाल ही में घोषित नई खाद्य प्रसंस्करण नीति में एक कदम आगे बढ़ कर बरबादी रोकने तथा कृषि उत्पाद का मूल्य बढ़ाने के कदम उठाए गए हैं। इस नीति में कृषि उत्पादक संगठनों एफपीओ तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को बढ़ावा के लिए वित्तीय सहायता तथा केन्द्रीय योजनाओं तक पहुंच सुनिश्चित करने के प्रयास किए गए हैं।

लेकिन यह उल्लेखनीय है कि पंजाब ने अब तक इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाया है, जबकि पड़ोसी राज्य हरियाणा में प्रतिबद्ध एग्रीबिजनेस खाद्य प्रसंस्करण नीति बनाई गई हैं। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेटिव स्कीम- पीएलआईएसएफआई के लिए 2021-22 से 2026-27 के बीच 10,900 करोड़ रुपये का प्राविधान किया गया है। इसका उद्देश्य वैश्विक रूप से प्रतियोगी फर्मों को भारत में उत्पाद व कृषि निर्यात क्षेत्र में आकर्षित करना है। इस योजना का लक्ष्य प्रसंस्करण क्षमता में सुधार, भारतीय ब्रांडों को मजबूत करना, विश्व बाजार में उपस्थिति बढ़ाना, रोजगार सृजन तथा किसानों की आमदनी बढ़ाना है। मई, 2024 तक पीएलएसएफआई के 90 प्रतिशत धन का प्रयोग नहीं हुआ था। सरकार ने 158 एसएमई लाभार्थियों को केवल 1,073 करोड़ रुपये दिए थे और इस प्रकार योजना का आधा समय बीत जाने के बावजूद उसका केवल 10 प्रतिशत धन प्रयोग हुआ था। इस प्रकार पैसे के बहुत कम प्रयोग से ज्यादा केन्द्रित नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता उजागर होती है।

पीएलआई योजना का लक्ष्य वैश्वक प्रतियोगिता क्षमता तथा निर्यात बढ़ाना है। इसे देखते हुए एसएमई को वैश्विक स्तर पर स्थापित एंकर' फर्मों के साथ संयुक्त उद्यम बनाने चाहिए। पिछले दशक में भारत ने शत प्रतिशत एफडीआई अनुमति के बाद 500 बिलियन प्रत्यक्ष विदेशी निवेश एफडीआई प्राप्त किया। इसे देखते हुए खाद्य प्रसंस्करण को भारत का 'सनराइज उद्योग' समझा जाना चाहिए जो किसानों को प्रभावी रूप से लाभ दिलाने, एमएसपी के प्रति बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाने तथा मूल्य संवर्धन और उद्योग में समन्वय स्थापित करने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। कृषि के विकास के लिए खाद्य पसंस्करण को रणनीतिक महत्व देना जरूरी है। दुनिया की सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश देश के नाते हम धरती पर पर्यावरण दबाव का अनुभव कर रहे हैं। इसके कारण मृदा क्षरण, जैवविविधता में कमी तथा जल संकट जैसे परिस्थितिकी मुद्दे सामने आ रहे हैं। व्यापक खाद्य व्यवस्थाओं में बरबादी रोकना जलवायु परिवर्तन के हानिकारक प्रभावों से बचने के लिए बहुत जरूरी है। इससे खेतों से लेकर खाने की मेज तक खाद्य सप्लाई बेहतर करने में सहायता मिलेगी तथा हानिकारक उत्सर्जन घटेगा। खाद्य प्रसंस्करण की अद्यतन तकनीकों के प्रयोग, वैश्विक स्तर पर स्वीकृत गुणवत्ता मानकों को मंजूर करने तथा अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंच खोलने के माध्यम से यह केन्द्रित रणनीति बड़ी वैश्विक फर्मों को आकर्षित कर हमारे लक्ष्य पूरे कर सकती है। इलेक्ट्रानिक क्षेत्र में 'एपल' लक्षित दृष्टिकोण की सफलता का एक माडल है। यही माडल विभिन्न उद्योगों के इसलिए लागू किया जाना चाहिए। खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय को समयबद्ध कार्यक्रम बना कर प्रमुख वैश्विक फर्मों के साथ कृषि उत्पादक संगठनों एफपीओ तथा एसएमई के बीच साझेदारियों को बढ़ावा देना चाहिए।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कोर चंद वाली मंडी हरजी राम वाली मलोट पंजाब - 152107

संपादक की कलम से

हिंदी पर बाजार का कब्जा

'भाषा ही किसी जाति की सभ्यता को सबसे अलग झलकाती है, यही उसके हृदय के भीतरी कल-पुर्जे का पता देती है। किसी जाति को अशक्त करने का सबसे सहज उपाय उसकी भाषा को नष्ट करना है।' 1912 में प्रख्यात आलोचक व निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने यह बात कही थी। उदारवाद का बिगुल फूंकते बहुतेरे टीवी चैनल आ गए। अखबार रंगीन और चिकने पन्ने वाले हुए और ग्लोबलिस्टों की नई-नई टुकडियां उनके संपादकीय पन्नों पर कब्जा करने लगीं। खुले दरवाजे पर तोरण की मानिंद लटकते पिंजरों में बैठे तोतों की तरह वे सुबह से शाम तक यह बताने लगे कि इस देश को 21वीं सदी में ले जाने के लिए हिंदी असमर्थ है। यह कठिन और दुरुह है। हिंदी को बिना शोध के टेक्नोफ्रेंडली से दूर किया गया। नतीजतन, धड़ाधड़ हिंदी के स्थापित और प्रचलित शब्दों को, जो संप्रेष्य थे, अपदस्थ कर उनकी जगह अंग्रेजी के शब्दों का उपयोग समाचारपत्रों में होने लगा। देशहित में हिंदी के विस्थापन को नए चिंतकों ने अनिवार्य मान लिया। अंग्रेजी के तीसरे दर्जे के कथित विद्वानों-लेखकों को हिंदी मीडिया में घर कर गई पूर्वाग्रह को दूर करने के लिए जगह दी जाने लगी। विभिन्न संस्थानों के सीईओ, एमडी आदि पदधारियों से सौदेबाजी के लिए उनके लेख/इंटरव्यू छापे जाने लगे। अब यह होड़ हिंदी चैनलों में ही है। भाषा-संहार पर सभी मूक-बधिर बन गए। वस्तुतः किसी भी भाषा को खत्म करने के लिए पहले उसे कठिन बताओ, फिर उसका उपहास करो और अंत में उसे अनुपयोगी घोषित कर दो, ताकि वह अपने आप ही मर जाए।

कोई भी भाषा केवल अपने साहित्य के दम पर जिंदा नहीं रह सकती। यह जरूरी है कि ये भाषाएं साहित्य-संस्कृति के साथ-साथ रोजगार की भी भाषाएं बनें। बाजार अपने राजनीतिक ताने-बाने के साथ अपना शब्द भंडार, शब्दावलियां और भाषिक प्रभुत्व भी बनाता है। इंग्लैंड में अंग्रेजी से पहले भी कई भाषाएं थीं और उनका साहित्य था। अंग्रेजी ने अन्य भाषाओं को दबा कर अपना प्रभुत्व इंग्लैंड में और कालांतर में उपनिवेशीकरण के जरिये दुनिया के दूसरे देशों को बढ़ाया। धीरे-धीरे अंग्रेजीकरण और ज्ञान प्रक्रिया का आधुनिकीकरण एक-दूसरे के पर्याप्त समझ लिए गए। विदित है कि हिंदी पहले बुद्धिवाद और समावेशी राष्ट्रवाद की वाहक मानी जाती थी, जो आज भी है, किन्तु बाजार ने इसे कहीं का नहीं रहने दिया। इसके सटीक उदाहरण आध्यात्मिक बाजार, मल्टी प्लेक्स और क्रिकेट के मैदान में दिख रहे हैं। क्या अंग्रेजी अपनाने से ही ज्ञान या सोच की प्रक्रिया आधुनिक हो जाएगी? उल्लेखनीय है कि एक उत्तर-औपनिवेशिक मामला भाषा, साहित्य और संस्कृति में अस्मिता की राजनीति का है। विडंबना है कि हम टेक्नोलोजी और आधुनिकीकरण के जितने शिखर पर चढ़ते जा रहे हैं, सामाजिक विविधता उतनी ही तेजी से सामाजिक भिन्नता में बदलती जा रही है। इसी कारण सांस्कृतिक हाहाकार मच रहा है। प्रतिरोध के दृश्य दिख रहे हैं। आज समाज को जो पीढियां नेतृत्व दे रही हैं, उनकी नैतिक गड़बडियों के मूल में कहीं भाषा के प्रति उनकी असावधानी और गैर जिम्मेदाराना सलूक तो नहीं है। कभी हिंदी का जन्म बाजार में हुआ था, बाजार में ही उसका विकास हुआ, पर आज बाजार ही उसे तहस-नहस कर रहा है। इसलिए, इसका विकास व भविष्य बाजार के हाथ में है। शिक्षा के बाजारीकरण ने रही-सही कसर भी पूरी कर दी। अंग्रेजी ने तो आधुनिकता का अर्थ संकुचित कर दिया है, जबकि लंबे काल खंड से हिंदी आधुनिकता को व्यापकता प्रदान करते आया है। दुखद पहलू है कि विश्व-बोध के लिए ग्लोबल होना आवश्यक है, जिसमें बाधक राष्ट्र है।

एक अफसर ने तो यह कह कर चौंका दिया कि भारतीय भाषाएं अवधारणात्मक चिंतन के लिए अंग्रेजी की तुलना में उतनी योग्य नहीं हैं। हिंदी केवल भाषा ही नहीं, यह भारत की स्वत्व, अस्मिता और संस्कृति की भी प्रतीक है। समाज में चेतना जागरण, देशभक्ति का भाव, अपनी संस्कृति और जीवन मूल्यों का ज्ञान भाषा के माध्यम से ही किया जा सकता है। आज भी हिंदी ही हम सबको एकता के सूत्र में बांध सकती है और समाज तथा राष्ट्र को समृद्धशाली बना सकती है। दुनिया में महाशक्ति का दर्जा पाने वाले देशों की अदालतों में मातृभाषा को अपनाया जाता है।

कविता

जिद बड़ी या जिंदगी!

कोलकाता में डॉक्टर अब भी काम पर नहीं लौटे हैं। बंगाल सरकार ने संवाद और समझौते का जो प्रयास किया था, वह आंदोलनकारी डॉक्टरों की जिद ने नाकाम कर दिया। एक नाटकीय घटनाक्रम जरूर सामने आया है कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने, हाथ जोड़ कर, बंगाल की जनता से माफी मांगी है। यदि जनता चाहेगी, तो वह मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा तक देने को तैयार हैं। उन्होंने कहा है कि वह 'कुर्सी की भूखी' नहीं हैं, बल्कि न्याय की पक्षधर हैं। हालांकि रेप-मर्डर की शिकार डॉक्टर बिटिया के माता-पिता और आंदोलनकारी डॉक्टरों ने कभी भी मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के इस्तीफे की मांग नहीं की। इसे विपक्षियों ने मुद्दा बनाकर राजनीति करने की कोशिशें की हैं। डॉक्टरों का न्याय अलग किस्म का है, ताकि डॉक्टर बिटिया की आत्मा को सुख, शांति मिल सके। डॉक्टर मुख्यमंत्री से संवाद करने सचिवालय गए थे। उनकी संख्या 32 बताई गई है, जबकि सरकार ने 15 डॉक्टरों को ही, प्रतिनिधि के तौर पर, आमंत्रित किया था। बहरहाल बंगाल सरकार ने उस संख्या को भी अनुमति दे दी। राज्य के मुख्य सचिव मनोज पंत और पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार डॉक्टरों को समझाते रहे कि विरोध-प्रदर्शन का यह सिलसिला टूटना क्यों जरूरी है? बातचीत का सीधा प्रसारण संभव नहीं है। अलबत्ता संवाद की रिकॉर्डिंग जरूर कराई जाएगी, लेकिन आक्रोशित डॉक्टर लगातार यह सवाल करते रहे कि सीधे प्रसारण से सरकार डरती क्यों है? डॉक्टर 'नबन्ना' सचिवालय के गलियारे तक तो पहुंच गए, लेकिन उस कक्ष के भीतर नहीं गए, जहां मुख्यमंत्री ममता बनर्जी 2.10 घंटे से आंदोलनकारी डॉक्टरों की प्रतीक्षा कर रही थीं। नतीजतन संवाद का जो सेतु बनाया गया था, वह ढह गया। डॉक्टर लौट गए और धरना-स्थल पर जाकर बैठ गए। मुख्यमंत्री ने इस्तीफे तक की पेशकश की और बंगाल की जनता से माफी मांगी कि वह डॉक्टरों को ड्यूटी पर वापस लाने में नाकाम रहीं। यह ममता बनर्जी की 'भावुक राजनीति' भी हो सकती है, ताकि अधिकतर लोग उनसे नाराज न हों और समर्थन समाप्त करने पर आमादा न हो जाएं! बंगाल के अलग-अलग हिस्सों में विपक्षी दल आक्रामक होकर विरोध-प्रदर्शन कर मुख्यमंत्री का इस्तीफा मांग रहे हैं। डॉक्टर तो आंदोलित हैं ही, लेकिन उनके समर्थन में विभिन्न सामाजिक आंदोलन भी छिड़ गए हैं, लिहाजा राज्य में अराजकता की स्थिति है। सडक़ों पर भीड़ है, तो पुलिसकर्मी भी हैं। अदालतों में अलग केस चल रहे हैं। ममता की यह राजनीति आजमाई हुई है। बहरहाल डॉक्टरों का आंदोलन अब एक जिद का रूप धारण कर चुका है। सर्वोच्च अदालत ने उन्हें काम पर लौटने का समय दिया था, वह गुजर चुका है। शीर्ष अदालत डॉक्टरों के सरोकारों की लड़ाई लड़ रही है, लेकिन आंदोलनकारियों को भरोसा ही नहीं है। यह जिद ही नहीं, अवमानना भी है। डॉक्टर जिंदगी के साथ खिलवाड़ करने लगे हैं, क्योंकि आरजी कर अस्पताल में इलाज न मिलने से अभी तक 27 लोगों की अकाल मौत हो चुकी है और 7 लाख से अधिक लोग प्रभावित हैं। यकीनन डॉक्टर बिटिया के प्रसंग पर पूरा देश गुस्से में रहा है, क्षुब्ध रहा है, असंख्य विरोध-प्रदर्शन भी किए गए हैं। डॉक्टरों के साथ सहानुभूति है, संवेदना है, क्योंकि बिटिया चिकित्सकों की सुरक्षा वाकई चिंतित सरोकार है, लेकिन काम छोड़ कर आंदोलन ही जारी रखना या जुलूस निकालना अथवा डॉक्टर होकर धरने पर खाली बैठे रहना, दरअसल अपनी पेशेवर प्रतिबद्धता से मुंह मोडऩा है।

विजय गर्ग

ओजोन थेरेपी आपकी समग्र उपचार यात्रा को सशक्त बनाती है

ओजोन थेरेपी, एक समग्र उपचार दृष्टिकोण जो दुनिया भर में गति प्राप्त कर रहा है, ओजोन की शक्ति का उपयोग करता है - भलाई को बढ़ावा देने के लिए एक प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली गैस। आयुर्वेद के साथ संयुक्त होने पर, ओजोन थेरेपी स्वास्थ्य और उपचार के लिए एक सहक्रियात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है। आयुर्वेदिक सिद्धांत ओजोन थेरेपी के एकीकरण का मार्गदर्शन करते हैं, व्यक्तिगत संविधान और असंतुलन के लिए व्यक्तिगत उपचार योजनाओं पर जोर देते हैं। प्राचीन ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़कर, यह समग्र दृष्टिकोण समग्र कल्याण, जीवन शक्ति और दीर्घायु को बढ़ावा देते हुए बीमारी के मूल कारणों को संबोधित करता है। ओजोन थेरेपी के पीछे का तंत्रः इसकी चिकित्सीय कार्रवाई को समझना ओजोन थेरेपी शरीर की जैविक प्रक्रियाओं के साथ एक आकर्षक परस्पर क्रिया के माध्यम से संचालित होती है, जो सेलुलर स्तर पर अपना प्रभाव डालती है। इसकी क्रियाविधि को समझने से इसके चिकित्सीय लाभों पर प्रकाश पड़ता है। प्रतिक्रियाशील ऑक्सीजन प्रजातियाँ (आरओएस) यह शरीर के भीतर प्रतिक्रियाशील ऑक्सीजन प्रजातियों (आरओएस) के उत्पादन को प्रेरित करता है। ये आरओएस सिग्नलिंग अणुओं के रूप में कार्य करते हैं, जो जैव रासायनिक प्रतिक्रियाओं का एक झरना शुरू करते हैं जो विभिन्न सेलुलर प्रतिक्रियाओं को उत्तेजित करते हैं। सेलुलर चयापचय यह ऑक्सीजन के उपयोग और ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाकर सेलुलर चयापचय को प्रभावित करता है। ऊतकों तक ऑक्सीजन वितरण बढ़ाकर, ओजोन थेरेपी सेलुलर श्वसन को अनुकूलित करती है, जिससे एटीपी संश्लेषण और चयापचय दक्षता में सुधार होता है। प्रतिरक्षा मॉड्यूलेशन यह प्रतिरक्षा समारोह पर गहरा प्रभाव डालता है, शरीर की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को विनियमित करने के लिए एक इम्युनोमोड्यूलेटर के रूप में कार्य करता है। यह मैक्रोफेज, टी लिम्फोसाइट्स और प्राकृतिक हत्यारा कोशिकाओं जैसे प्रतिरक्षा कोशिकाओं की गतिविधि को बढ़ाता है, जिससे रोगजनकों, विषाक्त पदार्थों और असामान्य कोशिकाओं की पहचान और उन्मूलन की सुविधा मिलती है। समग्र उपचार का उपयोगः ओजोन थेरेपी के आयुर्वेदिक लाभ ओजोन थेरेपी, समग्र स्वास्थ्य प्रथाओं में मान्यता प्राप्त करने वाली एक पद्धति, आयुर्वेदिक सिद्धांतों के अनुरूप लाभ का एक स्पेक्ट्रम प्रदान करती है। आयुर्वेद में, स्वास्थ्य को मन, शरीर और आत्मा के सामंजस्यपूर्ण संतुलन के रूप में देखा जाता है और उपचार का उद्देश्य इस संतुलन को बहाल करना है। विषहरण सहायताः परिसंचरण और चयापचय प्रक्रियाओं को बढ़ाकर शरीर से विषाक्त पदार्थों को खत्म करने में सहायता करता है। यह शरीर के जन्मजात विषहरण मार्गों का समर्थन करता है, समग्र कल्याण और जीवन शक्ति को बढ़ावा देता है। सूजन रोधी गुणः सूजन के मार्गों को नियंत्रित करने की अपनी क्षमता के साथ, यह पुरानी सूजन को कम करता है, जो अक्सर विभिन्न बीमारियों की जड़ होती है। ऊतक उपचार और बहाली को बढ़ावा देकर, यह सूजन की स्थिति से जुड़े लक्षणों को कम करता है, समग्र उपचार को बढ़ावा देता है। प्रतिरक्षा प्रणाली में वृद्धिः साइटोकिन्स और प्रतिरक्षा कोशिकाओं के उत्पादन को उत्तेजित करता है, शरीर की रक्षा तंत्र को मजबूत करता है। यह प्रतिरक्षा वृद्धि रोग की रोकथाम के आयुर्वेदिक सिद्धांतों के अनुरूप है, जो रोगजनकों और संक्रमणों के खिलाफ लचीलापन सुनिश्चित करती है। बुढ़ापा रोधी लाभः कोलेजन उत्पादन को उत्तेजित करता है, त्वचा की लोच में सुधार करता है और उम्र बढ़ने के संकेतों को कम करता है। नियमित उपयोग से, यह महीन रेखाओं, झुर्रियों और उम्र के धब्बों को कम करने में मदद करता है, जिससे रंगत युवा बनी रहती है। ओजोन थेरेपी, बुढ़ापा रोधी उपचार, मुँहासे उपचार मूड में सुधारः एंडोर्फिन और न्यूरोट्रांसमीटर जारी करता है, खुशी और कल्याण की भावनाओं को बढ़ावा देता है। यह तनाव, चिंता और अवसाद को कम करता है, भावनात्मक संतुलन और मानसिक स्पष्टता को बढ़ावा देता है। मुँहासे उपचारः प्रभावित क्षेत्रों पर स्थानीय रूप से ओजोन लगाने से मुँहासे पैदा करने वाले बैक्टीरिया और सूजन को प्रभावी ढंग से कम किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, ओजोनेटेड तेल और क्रीम मुँहासे-प्रवण त्वचा को शांत और ठीक करते हैं, साफ रंग को बढ़ावा देते हैं और समग्र त्वचा देखभाल का समर्थन करते हैं। कुल मिलाकर अच्छी तरह जा रहाः अपने बहुमुखी उपचार दृष्टिकोण के साथ, ओजोन थेरेपी अन्य आयुर्वेदिक तौर-तरीकों के साथ सहजता से एकीकृत होती है, जिससे समग्र कल्याण और जीवन शक्ति में वृद्धि होती है। यह समग्र उपचार के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण सुनिश्चित करते हुए, व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप वैयक्तिकृत उपचार योजनाएँ प्रदान करता है। ओजोन थेरेपी को समग्र उपचार पद्धतियों में एकीकृत करना ओजोन थेरेपी विभिन्न समग्र उपचार पद्धतियों के साथ सहजता से एकीकृत होती है, उनकी प्रभावकारिता को बढ़ाती है और समग्र कल्याण को बढ़ावा देती है। यहां उदाहरण दिए गए हैं कि कैसे ओजोन थेरेपी को समग्र उपचार पद्धतियों में शामिल किया गया हैः ऊर्जा उपचारः सेलुलर जीवन शक्ति को बढ़ावा देने और शरीर के ऊर्जावान मार्गों को संतुलित करके ऊर्जा उपचार प्रथाओं का समर्थन करता है। जब रेकी या एक्यूपंक्चर जैसी तकनीकों के साथ जोड़ा जाता है, तो ओजोन थेरेपी भौतिक और सूक्ष्म दोनों स्तरों पर समग्र उपचार की सुविधा प्रदान करती है। दिमागीपन अभ्यासः इस थेरेपी को माइंडफुलनेस प्रथाओं में शामिल करने से शारीरिक और मानसिक कल्याण को बढ़ावा देकर उनके चिकित्सीय लाभों में वृद्धि होती है। ओजोन थेरेपी के कायाकल्प प्रभाव ध्यान और सांस लेने जैसी दिमागीपन तकनीकों के पूरक हैं, जो विश्राम, तनाव में कमी और भावनात्मक संतुलन को बढ़ाते हैं। पोषण चिकित्साः पोषक तत्वों के अवशोषण और सेलुलर चयापचय को अनुकूलित करके पोषण चिकित्सा के साथ तालमेल बिठाता है। जब पोषक तत्वों से भरपूर आहार और पूरकता के साथ जोड़ा जाता है, तो ओजोन थेरेपी शरीर की पोषण संबंधी जरूरतों का समर्थन करती है, समग्र उपचार दृष्टिकोण को प्रभावी ढंग से पूरक करती है। ओजोन थेरेपी के माध्यम से टीकाकरण के बाद के लक्षणों के लिए समग्र समर्थन COVID-19 टीकाकरण के बाद, कुछ व्यक्तियों को थकान, खराश, बुखार और रक्त के थक्के जैसे हल्के से मध्यम दुष्प्रभाव का अनुभव हो सकता है। ओजोन थेरेपी अपने एंटी-इंफ्लेमेटरी और इम्यून-मॉड्यूलेटिंग प्रभावों के माध्यम से इन लक्षणों को संबोधित करके समग्र सहायता प्रदान करती है। सूजन को कम करके और प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को बढ़ाकर, ओजोन थेरेपी असुविधा को कम करने और टीकाकरण के बाद तेजी से रिकवरी को बढ़ावा देने में मदद कर सकती है। यह एकीकृत दृष्टिकोण शरीर की प्राकृतिक उपचार प्रक्रियाओं का समर्थन करता है, व्यक्तियों को टीके से संबंधित लक्षणों को प्रबंधित करने और समग्र कल्याण को बढ़ाने के लिए एक सौम्य और प्रभावी साधन प्रदान करता है। ओजोन थेरेपी को समग्र उपचार पद्धतियों में शामिल करने से विषहरण को बढ़ावा देने, सूजन को कम करने और प्रतिरक्षा समारोह को बढ़ाकर समग्र कल्याण में वृद्धि होती है। ऊर्जा उपचार, माइंडफुलनेस प्रथाओं और पोषण चिकित्सा जैसे तौर-तरीकों के साथ सहजता से एकीकृत होकर, यह व्यापक देखभाल प्रदान करता है जो मन, शरीर और आत्मा के अंतर्संबंध को संबोधित करता है, इष्टतम स्वास्थ्य और जीवन शक्ति को बढ़ावा देता है। ओजोन थेरेपी को समग्र स्वास्थ्य देखभाल में एकीकृत करना स्वाभाविक रूप से श्वसन स्वास्थ्य को अनुकूलित करने में एक महत्वपूर्ण प्रगति है। जब इसे पूरक तौर-तरीकों के साथ जोड़ा जाता है, तो यह बेहतर श्वसन स्वास्थ्य और समग्र जीवन शक्ति की दिशा में एक परिवर्तनकारी यात्रा का मार्ग प्रशस्त करता है। आइए ओजोन थेरेपी को आशा की किरण के रूप में अपनाएं, जो हमें उन्नत कल्याण और आनंदमय जीवन के साथ प्रचुर भविष्य की ओर मार्गदर्शन करती है।

स्थानीय संस्कृतियों का क्षरण और डिजिटल उपनिवेशीकरण का उदय

विजय गर्ग

हम तेजी से डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भरोसा कर रहे हैं जिसका स्थानीय संस्कृतियों और विचार प्रक्रियाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। यह हमारी सांस्कृतिक पहचान के भविष्य के बारे में गंभीर चिंताएँ पैदा करता है एक समय था जब एक गाँव के लोग एक दूसरे को जानते थे। किसी व्यक्ति के व्यवहार में एक मिनट का बदलाव दूसरों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित कर देगा। उस समाज में बच्चे सुरक्षित थे। हमारे देश के प्रत्येक शहर या प्रत्येक स्थान की अपनी संस्कृति, परंपराएं, भाषा, खान-पान की आदतें, उत्पादित उत्पाद और यहां तक कि बताने के लिए एक कहानी भी अद्वितीय है। उपनिवेशीकरण, बाहरी और आंतरिक दोनों, जो एक समूह द्वारा दूसरे पर नियंत्रण के अभ्यास की विशेषता है, ने इतिहास के पुनर्लेखन पर गहरा प्रभाव डाला है। इसके पीछे कई प्रेरणाएँ रही हैं, जिनमें आर्थिक लाभ, क्षेत्रीय विस्तार, धार्मिक रूपांतरण और भू-राजनीतिक शक्ति सहित अन्य विचार शामिल हैं। पहले के समय में, विदेशी लोग ही स्थानीय समुदाय में घुसपैठ करते थे; अब, मूल लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने से एक क्षेत्र की जनसांख्यिकीय रूपरेखा बदल गई है। कई व्यक्तियों के लिए, उपनिवेशवाद के परिणाम विनाशकारी रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप सांस्कृतिक रीति-रिवाजों का जानबूझकर विनाश, व्यक्तियों का शोषण और जबरन वसूली हुई है। आबादी का विस्थापन. उपनिवेशीकरण के कारण होने वाला सांस्कृतिक विनाश इसके सबसे स्थायी प्रभावों में से एक है। उपनिवेशवादियों ने अक्सर अपनी संस्कृतियों को श्रेष्ठ के रूप में चित्रित किया, जिससे स्वदेशी भाषाओं, धर्मों और रीति-रिवाजों का दमन हुआ। उस प्रक्रिया में, हमने उन स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को भी खो दिया जो हमारे समाज में फल-फूल रही थीं। यहां तक कि किसी राज्य या क्षेत्र के लोगों द्वारा बोली जाने वाली विभिन्न बोलियां भी बाहरी संपर्क के कारण लुप्त हो गई हैं। यह उस समय के दौरान रचित साहित्यिक कृतियों में भी परिलक्षित हुआ है। दुर्भाग्य से, उपनिवेशीकरण के साथ, हमने अपने समाज को एकरूप बना दिया। जब हम देश भर में यात्रा करते हैं तो इसे देखा जा सकता है। हमने अपने शहरों में जिस समान तरीके से बुनियादी ढांचे का निर्माण किया है, उससे हर शहर एक जैसा दिखने लगा है। 90 के दशक के उत्तरार्ध तक, हमारे देश में प्रत्येक स्थान को किसी विशिष्ट भूगोल, किसी विशिष्ट बाज़ार या यहाँ तक कि किसी व्यक्ति की उपस्थिति से जाना जाता था। फिर भी, उपनिवेशवाद ने मूल और उपनिवेशित आबादी के बीच ज्ञान, संस्कृति, भोजन की आदतों, अवधारणाओं और प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान को भी बढ़ावा दिया है। 21वीं सदी में, इंटरनेट ने एक नए प्रकार का उपनिवेशीकरण ला दिया है जिसने हमारे समाज में घुसपैठ करना शुरू कर दिया है। उपनिवेशीकरण के इस नए रूप को डिजिटल उपनिवेशीकरण के रूप में जाना जाता है। शब्द ₹डिजिटल उपनिवेशीकरण₹ का तात्पर्य पूरी दुनिया के डिजिटल बुनियादी ढांचे और डेटा पर कई बहुराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी व्यवसायों के प्रभुत्व से है, जिनमें से अधिकांश संयुक्त राज्य अमेरिका और कुछ धनी देशों में स्थित हैं। अपनी सभी दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताओं के लिए, हमने व्यक्तिगत बातचीत की मात्रा को कम करते हुए, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर अधिक भरोसा करना शुरू कर दिया। इस नई डिजिटल संस्कृति ने हमारे देश के सुदूरतम हिस्सों में भी घुसपैठ कर ली है। ये डिजिटल टाइटन्स हमारे जीवन में हर चीज को प्राथमिकता देते हैं, जिसमें हमें क्या खरीदना चाहिए, हमें किसके साथ दोस्ती करनी चाहिए, कहां पढ़ाई करनी है, कौन सा कोर्स करना है और यहां तक कि कहां बच्चे को जन्म देना है। यह संभावित रूप से स्थानीय परंपराओं और भाषाओं को नष्ट कर सकता है, क्योंकि आज उपयोग किए जाने वाले अधिकांश भाषा प्रारूप डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के अनुरूप डिज़ाइन किए गए हैं। लोग डिजिटल प्लेटफॉर्म पर जो भी उपलब्ध है उस पर आंख मूंदकर विश्वास करने लगे। यह लत इतनी गंभीर है कि दिल्ली-एनसीआर के ऑटो और टैक्सी ड्राइवर, जिनके पास उत्कृष्ट नेविगेशन कौशल थापहले दिमाग का इस्तेमाल करते थे, अब गूगल मैप्स पर शिफ्ट हो गए हैं। वैश्विक आईटी दिग्गज विभिन्न कारणों से सार्वभौमिक डिजिटल संस्कृति को बढ़ावा देते हैं, जिनमें से कई उनके व्यवसाय मॉडल और विकास रणनीतियों से जुड़े हैं। हालाँकि यह डिजिटल संस्कृति वैश्विक कनेक्टिविटी, सूचना पहुंच और सहयोग को बढ़ावा देती है, लेकिन इसमें क्षेत्रीय विविधता और पारंपरिक जीवन शैली को अस्पष्ट करने की भी क्षमता है। कुछ तकनीकी कंपनियों के हाथों में सत्ता का संकेंद्रण, सांस्कृतिक विलोपन और गोपनीयता ये सभी चिंताएँ इन निगमों के प्रभुत्व से उत्पन्न हुई हैं।

भारतीय शेयर बाजार के प्रति जारी है विदेशी निवेशकों का आकर्षण, 13 सितंबर तक खरीदे 16,881 करोड़ के शेयर

परिवहन विशेष न्यूज

विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) का घरेलू शेयर बाजारों के प्रति आकर्षण बना हुआ है। 9 से 13 सितंबर 2024 के दौरान एफपीआई ने 16881 .03 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे हैं। एफपीआई ने सितंबर के पहले सप्ताह में भी इक्विटी बाजारों में 10980 करोड़ रुपये का मजबूत निवेश किया था। यह एफपीआइ के बीच घरेलू इक्विटी बाजारों के प्रति बढ़ते भरोसे को भी दर्शाता है।

नई दिल्ली। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) का घरेलू शेयर बाजारों के प्रति आकर्षण बना हुआ है। यही कारण है कि सितंबर के दूसरे सप्ताह में भी एफपीआई घरेलू इक्विटी बाजारों में शुद्ध खरीदार रहे हैं। नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल) के अनुसार, बीते सप्ताह यानी 9 से 13 सितंबर 2024 के दौरान एफपीआई ने 16,881.03 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे हैं। एफपीआई ने सितंबर के पहले सप्ताह में भी इक्विटी बाजारों में 10,980 करोड़ रुपये का मजबूत निवेश किया था। यह एफपीआइ के बीच घरेलू इक्विटी बाजारों के प्रति बढ़ते भरोसे को भी दर्शाता है।

बढ़ गया एफपीआई निवेश

इस निवेश के साथ सितंबर के दौरान भारतीय इक्विटी बाजारों में एफपीआई निवेश बढ़कर 27,861 करोड़ रुपये हो गया है। इससे पहले अगस्त में घरेलू इक्विटी बाजारों में एफपीआई निवेश सिर्फ 7,322 करोड़ रुपये रहा था। कैलेंडर वर्ष 2024 के दौरान इक्विटी बाजारों में एफपीआई का कुल निवेश 70,737 करोड़ रुपये हो गया है।

बाजार के जानकारों का कहना है कि अब विदेशी और घरेलू निवेशकों की निगाह अमेरिका के केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व की अगली बैठक पर होगी। इस बैठक में ब्याज दरों में कटौती पर फैसला हो सकता है। दूसरी ओर, डेट बाजारों में बीते सप्ताह एफपीआई निवेश में 317 करोड़ रुपये की कमी आई है और सितंबर में डेट बाजारों में कुल एफपीआई निवेश 50 करोड़ रुपये रह गया है। अब डेट बाजारों में इस वर्ष कुल एफपीआइ निवेश 1,08,957 करोड़ रुपये हो गया है।

आपकी सेविंग पर महंगाई पर असर, 10 साल बाद कितनी होगी 1करोड़ रुपये की वैल्यू

परिवहन विशेष न्यूज

महंगाई लगातार बढ़ रही है। ऐसे में इसका सीधा असर रुपये की वैल्यू पर पड़ रहा है। 10 साल पहले 1 लाख रुपये की कीमत थी वो आज घट गई है। इसी तरह आने वाले 10 साल के बाद करोड़ रुपये की वैल्यू भी कम हो जाएगी। हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे कि आने वाले 10 20 साल में करोड़ रुपये की वैल्यू कितनी रह जाएगी।

नई दिल्ली। महंगाई की मार कम होने का नाम नहीं ले रही है। ऐसे में भविष्य की चिंता को दूर करने के लिए हम जॉब के साथ निवेश करते हैं। लेकिन कभी आपने सोचा है कि आप जिस स्कीम में निवेश कर रहे हैं उसके मैच्योर होने के बाद उस राशि की वैल्यू कितनी रह जाएगी।

दरअसल, हम निवेश अपने फ्यूचर को सिक्योर करने के लिए करते हैं। अबऐसे में कई निवेश स्कीम 10-15 साल के बाद मैच्योर होती है। 10-15 साल के बाद रिटर्न राशि तो पता होती है लेकिन उसकी वैल्यू आज की तुलना में कम हो जाती है।

हम आपको बताएंगे कि 10, 20 साल के बाद करोड़ रुपये की वैल्यू कितनी रहने वाली है। लेकिन, इससे पहले जान लेते हैं कि आखिर रुपये की वैल्यू में समय के साथ गिरावट क्यों आती है।

क्यों कम होती है पैसों की वैल्यू

हर साल महंगाई बढ़ रही है। ऐसे में समय के साथ रुपये की वैल्यू कम हो जाती है। इसे ऐसे समझें कि आज सरसों का तेल 150 रुपये लीटर मिल रहा है। वहीं 5 साल पहले इसकी कीमत 70 रुपये थी। ऐसे में आगे के 10 साल बाद तेल की कीमत 300 रुपये लीटर हो सकती है। इस तरह बाकी चीजों जैसे सोने-चांदी, घर के दाम भी बढ़ रहे हैं। अब उपभोक्ता इन सभी सामानों को तो खरीदेंगे चाहें महंगाई कितनी भी हो और इस तरह रुपये का मूल्य कम होता जाता है। उदाहरण के तौर पर 10 साल पहले 100 रुपये में जहां 3-4 सामान खरीदा जा सकता था वहीं, अब 100 रुपये में केवल एक सामान खरीद सकते हैं। ऐसे में महंगाई में तेजी को देखें तो शायद 10 साल के बाद 100 रुपये में कोई सामान न आए। इस तरह 100 रुपये की वैल्यू कम हो सकती है। अगर हम इन्फलेशन रेट 6 फीसदी मानते हैं तो 10 साल के बाद 1 करोड़ रुपये की वैल्यू करीब 55.84 लाख रुपये हो जाएगी। इसी तरह 20 साल के बाद 1 रुपये की कीमत लगभग 31 लाख रुपये हो जाएगी।

जेब पर कम होगा बोझ, कई शहरों में घटी प्याज की कीमतें, आपके शहर में क्या है रेट

पिछले कुछ महीने से Onion Price में तेजी देखने को मिली। बढ़ते प्याज की कीमतों की वजह से महंगाई पर भी इसका असर पड़ा। ऐसे में प्याज की कीमतों में नरमी लाने के लिए सरकार ने 5 सितंबर को फैसला लिया था कि वह सब्सिडी कीमत पर प्याज बेचेगी। इस पहल को लेकर मिनिस्ट्री ऑफ कंज्यूमर्स अफेयर्स ने बताया कि कई शहरों में प्याज की कीमत कम हो गई है।

नई दिल्ली। देश में प्याज की कीमतों में बढ़ोतरी को रोकने के लिए सरकार ने सब्सिडी कीमत पर प्याज बेचना शुरू किया था। मिनिस्ट्री ऑफ कंज्यूमर्स अफेयर्स ने आज एक बयान जारी किया। इस बयान के अनुसार देश के कई शहरों में प्याज की कीमत कम हो गई है।

इस महीने 5 सितंबर 2024 को सरकार ने सब्सिडी वाले प्याज बेचने का फैसला लिया था। इस फैसले का असर कुछ दिनों में ही दिखना शुरू हो गया। सरकार ने प्याज की कीमतों को कम करने के लिए यह फैसला लिया था। सरकार की इस पहल के बाद राजधानी दिल्ली में प्याज की कीमत 60 रुपये प्रति किलो से घटकर 55 रुपये प्रति किलो हो गई है।

कई शहरों में कम हुई कीमत

मंत्रालय ने अपने स्टेटमेंट में कहा कि राजधानी दिल्ली के अलावा देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में भी प्याज की कीमत में नरमी आई है। मुंबई में प्याज 61 रुपये प्रति किलो से कम होकर 56 रुपये प्रति किलो हो गया है। चेन्नई में भी प्याज की खुदरा कीमत 65 रुपये से घटकर 58 रुपये प्रति किलो हो गई है।

सरकार ने शुरू किया पहल

सरकार ने प्याज की बढ़ती कीमत पर लगाम कसने के लिए NCCF और NAFED के मोबाइल वैन और आउटलेट के जरिये 35 रुपये प्रति किलो के भाव पर प्याज की बिक्री करना शुरू किया था। सरकार ने यह पहल दिल्ली और मुंबई में शुरू किया था। अब चेन्नई, कोलकाता, पटना, रांची, भुवनेश्वर और गुवाहाटी सहित कई प्रमुख शहरों में यह पहल शुरू की।

अब सरकार सब्सिडी वाले प्याज की सप्लाई बढ़ाने के लिए डिस्ट्रिब्यूशन चेनल्स को भी शामिल किया है। इसका मतलब है कि ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, केंद्रीय भंडार आउटलेट और मदर डेयरी के सफल स्टोर पर भी सब्सिडी वाले प्याज की बिक्री होगी।

4.7 लाख टन का बफर स्टॉक

मंत्रालय ने बताया कि सरकार के पास 4.7 लाख टन प्याज का बफर स्टॉक है। ऐसे में सरकार को उम्मीद है कि आने वाले महीनों में प्याज की कीमतों में नरमी आ सकती है।

इन बीमारियों का फ्री में होता है इलाज, सीनियर सिटिजन भी बनवा सकते हैं आयुष्मान कार्ड

Ayushman Bharat Scheme का नाम बदलकर पीएम जनआरोग्य योजनाकर दिया गया है। इस योजना में 5 लाख रुपये का हेल्थ इंश्योरेंस मिलता है। पहले इस योजना में 70 साल से ज्यादा उम्र वाले व्यक्ति शामिल नहीं होते थे पर अब उनको भी कवर किया जाता है। इस आर्टिकल में जानते हैं कि योजना में कौन-सी बीमारियों का फ्री में इलाज होता है।

नई दिल्ली। बीमारी कभी उम्र और पैसे देखकर नहीं आती है। लेकिन, जब इलाज की बात आती है तब वित्तीय तौर पर स्थिर रहने की जरूरत है। ऐसे में भारत सरकार ने 2018 में आयुष्मान भारत योजना (Ayushman Bharat Scheme) शुरू किया था। इस योजना का नाम बदलकर पीएम जनआरोग्य योजना (PM Jan Arogay Yojana) कर दिया गया था।

इस योजना में पहले 70 उम्र से ज्यादा वाले सीनियर सिटिजन शामिल नहीं होते थे। लेकिन अब योजना में आयु की सीमा को खत्म कर दिया। इसका मतलब है कि 70 साल से ज्यादा आयु वाले बुजुर्गों का भी इलाज होगा। ऐसे में सवाल आता है कि योजना में किन बीमारियों का इलाज फ्री में होता है।

किन बीमारियों का होता है फ्री में इलाज

इस स्कीम में सभी बड़ी-बड़ी बीमारियां कवर होती है। योजना में 5 लाख रुपये का इंश्योरेंस मिलता है। इसके अलावा देशभर में 29,000 से ज्यादा अस्पतालों में कैशलेस और पेपरलेस हेल्थ सर्विसेज की सुविधा भी मिलती है।

आयुष्मान भारत योजना की वेबसाइट के हिसाब से इस योजना में कैंसर, हार्ट डिजीज, किडनी से जुड़ी बीमारियां, कोरोना, मोतियाबिंद, डेंगू, चिकुनगुनिया, मलेरिया, घुटना और नी रिप्लेसमेंट जैसे गंभीर बीमारियों का इलाज होता है। हालांकि, मोतियाबिंद, सर्जिकल डिलीवरी, और मलेरिया समेत कई बीमारियां का इलाज केवल सरकारी अस्पताल में होती है। इन बीमारियों को प्राइवेट अस्पताल से हटा दिया गया है।

इसके अलावा प्रोस्टेट कैंसर, डबल वॉल्व रिप्लेसमेंट, कोरोनरी आर्टरी बाइपास, पल्मोनरी वॉल्व रिप्लेसमेंट, नी और हिप रिप्लेसमेंट, स्कल बेस सर्जरी, टिश्यू एक्सपेंडर, पीडियाट्रिक सर्जरी, रेडिएशन ओंकोलॉजी, न्यूरोसर्जरी, एंजियोप्लास्टी विद स्टेंट जैसे गंभीर बीमारी की सर्जरी भी किसी अस्पताल में करवा सकते हैं।

कहां बनेगा आयुष्मान कार्ड

योजना का लाभ पाने के लिए लाभार्थी को आयुष्मान कार्ड (Ayushman Card) बनवाना होता है। आयुष्मान कार्ड के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मोड में अप्लाई किया जा सकता है। ऑनलाइन के लिए https://pmjay.gov.in/ की वेबसाइट पर जाकर अप्लाई करना होगा। वहीं, ऑफलाइन के लिए कॉमन सर्विस सेंटर (CSC) जाकर आवेदन करना होगा।

आयुष्मान कार्ड बनवाने के लिए आपको आईडी प्रूफ जैसे आधार कार्ड (Aadhaar Card), पैन कार्ड (Pan Card), ड्राइविंग लाइसेंस (Driving License), वोटर आईडी (Voter ID) आदि में से किसी की फॉटोकॉपी देनी होगी।

UIDAI ने बढ़ा दी आधार अपडेट की डेडलाइन, अब इस तारीख तक पूरा कर सकते हैं काम

UIDAI ने सभी आधार यूजर्स को फ्री में आधार अपडेट करने का मौका दिया था। वैसे तो आज फ्री आधार अपडेट करने की आखिरी तारीख थी लेकिन अब इस तारीख को बढ़ा दिया गया है। अब आधार यूजर्स 14 दिसंबर 2024 तक फ्री में आधार अपडेट करवा सकते हैं। हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे कि आप कैसे ऑनलाइन आधार अपडेट करवा सकते हैं।

नई दिल्ली। आधार कार्ड एक जरूरी डॉक्यूमेंट है। सरकारी या फिर गैर-सरकारी कामों में आईडी प्रूफ के तौर पर आधार कार्ड का इस्तेमाल किया जाता है। ऐसे में जरूरी है कि आधार कार्ड में दी गई सभी जानकारी सही हो। इस वजह से आधार कार्ड जारी करने वाली एजेंसी यानी UIDAI ने फ्री आधार कार्ड अपडेट करने की सुविधा दी थी।

UIDAI ने इसके लिए 14 सितंबर 2024 (शनिवार) तय की थी। अब इस तारीख को आगे बढ़ा दिया गया है। आधार यूजर्स अब 14 दिसंबर तक फ्री में आधार अपडेट करवा सकते हैं। फ्री अपडेट केवल ऑनलाइन ही किया जा सकता है। इसका मतलब है कि ऑफलाइन अपडेट के लिए अपडेशन फीस देनी होगी। हम आपको बताने जा रहे हैं कि आप ऑनलाइन आधार कार्ड कैसे अपडेट कर सकते हैं।

ऑनलाइन कैसे अपडेट करें आधार कार्ड

सबसे पहले आपको UIDAI के ऑफिशियल वेबसाइट पर जाना होगा।

अब आधार नंबर और रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर के जरिये लॉग-इन करें। लॉग-इन करने के लिए आपको मोबाइल पर आए ओटीपी को दर्ज करना होगा।

इसके बाद 'आधार अपडेट'के ऑप्शन में जाकर अपना प्रोफाइल चेक करें।

अब आपको जिस डिटेल्स को अपडेट करना है उसे सेलेक्ट करें।

इसके बाद ड्रॉपडाउन मेन्यू में 'I verify that the above details are correct' के चेकबॉक्स पर टिक करना है।

अब आधार अपडेट से जुड़े सभी डॉक्यूमेंट्स को अपलोड करें और सबमिट करें।

आधार अपडेट करने पर कितना देना होगा चार्ज

14 दिसंबर के बाद से ऑनलाइन आधार अपडेट करने पर भी चार्ज का भुगतान करना होगा। हालांकि, अभी भी ऑफलाइन आधार कार्ड अपडेट करने के लिए अपडेशन फीस देनी होगी। UIDAI के मुताबिक आधार कार्ड में पर अपडेट के लिए 50 रुपये का चार्ज लगता है।

आधार यूजर्स ऑनलाइन एड्रस प्रूफ, डेट ऑफ बर्थ और नाम आदि अपडेट करवा सकते हैं। बायोमैट्रिक और फोटो अपडेट केवल ऑफलाइन ही अपडेट होगा।

पेंशन के लिए एनपीएस है अच्छा ऑप्शन, 1.5 लाख मंथली पेंशन के लिए कितना करना होगा निवेश

रिटायरमेंट के बाद पेंशन पाने के लिए नेशनल पेंशन सिस्टम (NPS) काफी अच्छा ऑप्शन है। इस स्कीम में आप जितना निवेश करते हैं उस हिसाब से आपको मैच्योरिटी के बाद पेंशन का लाभ मिलता है। हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे कि 1.5 लाख रुपये के मासिक पेंशन पाने के लिए आपको हर महीने कितने रुपये का निवेश करना होगा।

नई दिल्ली। जॉब करने के साथ हमें फ्यूचर सिक्योर करने की टेंशन रहती है। इसके अलावा रिटायरमेंट के बाद के खर्चों को भी टेंशन बनी रहती है। ऐसे में अगर आप भी रिटायरमेंट के बाद पेंशन का लाभ उठाना चाहते हैं तो आप नेशनल पेंशन सिस्टम (NPS) में निवेश कर सकते हैं। एनपीएस में निवेश करके आप मोटा फंड जमा कर सकते हैं। आप चाहें तो रिटायरमेंट के बाद हर महीने 1.5 लाख रुपये का पेंशन का लाभ उठा सकते हैं। जी हां, नेशनल पेंशन सिस्टम में रिटायरमेंट के बाद मासिक पेंशन का लाभ मिलता है। हम आपको बताएंगे कि 1.5 लाख रुपये का मासिक पेंशन पाने के लिए आपको एनपीएस में कितना निवेश करना होगा।

हर महीने कितना करना होगा निवेश : 1.5 लाख रुपये का मासिक पेंशन पाने के लिए आपको हर महीने 7,000 रुपये का निवेश करना होगा।

एनपीएस में सालाना करीब 12 फीसदी का रिटर्न मिलता है। अगर आप 7,000 रुपये का निवेश लगातार 25 साल तक करते हैं तो 25 साल के बाद आप कुल 29,40,000 रुपये का निवेश कर चुके होंगे। इतने निवेश के साथ अगर 12 फीसदी का रिटर्न को जोड़ें तो लगभग 4.54 करोड़ रुपये का फंड जमा हो जाएगा।

इस फंड में से 40 फीसदी का इस्तेमाल एन्युटी खरीदने के लिए कर सकते हैं। बाकी 60 फीसदी बचे फंड का एकमुश्त निकाल सकते हैं। एन्युटी खरीदने के बाद आपको हर महीने करीब 1.5 लाख रुपये का पेंशन मिलेगा।

NPS में मिलता है टैक्स बेनिफिट : NPS का संचालन पेंशन फंड रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी (PFRDA) द्वारा किया जाता है।

'अब हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा बनाने का गया समय' अमित शाह बोले- बनेगा दुनिया का सबसे बड़ा शब्दकोष

हिंदी दिवस के अवसर गृह व सहकारिता मंत्री अमित शाह ने हिंदी को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में विकसित करने के लिए प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने कहा कि हिंदी अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने की दिशा में आगे बढ़ रही है। उनके अनुसार हिंदी संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने के साथ ही 10 से अधिक देशों की द्वितीय भाषा बन चुकी है।

नई दिल्ली। हिंदी दिवस के अवसर गृह व सहकारिता मंत्री अमित शाह ने हिंदी को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में विकसित करने के लिए प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने कहा कि हिंदी अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने की दिशा में आगे बढ़ रही है। उनके अनुसार हिंदी संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने के साथ ही 10 से अधिक देशों की द्वितीय भाषा बन चुकी है।

सभी भारतीय भाषाओं की सुरक्षा का केंद्र बनेगा

उन्होंने कहा कि "हिंदी शब्द सिंधु" शब्दकोष तैयार किया जा रहा है और अगले पांच साल में यह दुनिया का सबसे बड़ा शब्दकोष होगा। इस अवसर शाह ने भारतीय भाषा अनुभाग का शुभारंभ किया। शाह ने कहा कि आने वाले समय में यह सभी भारतीय भाषाओं की सुरक्षा का केंद्र बनेगा।

अमित शाह ने साफ किया कि हिंदी और स्थानीय भाषाओं के बीच कभी प्रतिस्पद्र्धा नहीं हो सकती, वे एक-दूसरे की पूरक हैं। नई शिक्षा नीति में प्राथमिक शिक्षा को मातृभाषा में देने की मोदी सरकार की नीति का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि जो देश अपनी भाषाओं की रक्षा नहीं कर पाते, वो अपने इतिहास, साहित्य व संस्कार से कट जाते हैं।

सभी भाषाओं के साहित्य, लेख और भाषणों का अनुवाद हिंदी में होगी

मातृभाषाओं को राष्ट्रीय सुरक्षा की अहम कड़ी बताते हुए शाह ने कहा कि जिस दिन हम अपनी भाषाओं को गंवा देंगे, उस दिन देश की एकता खतरे में पड़ जाएगी। भारतीय भाषा अनुभाग का शुभारंभ करते हुए अमित शाह ने कहा कि यह विभिन्न भाषाओं के बीच संवाद स्थापित करने का काम करेगा। इसके तहत हिंदी के किसी भी लेख, भाषण या पत्र में भावानुवाद देश की सभी भाषाओं में किया जाएगा और इसी प्रकार देश की सभी भाषाओं के साहित्य, लेख और भाषणों का अनुवाद हिंदी में होगी।

उन्होंने कहा कि "हिंदी शब्द सिंधु" शब्दकोष में सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों को समाहित किया जा रहा है। मोदी सरकार के दौरान स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा देने की नीति का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और उत्तराखंज में मेडिकल शिक्षा का संपूर्ण पाठ्यक्रम हिंदी में तैयार कर लिया गया है।

भारत की 13 भाषाओं में इंजीनियरिंग का पाठ्यक्रम तैयार करने का काम जारी

इसी तरह से भारत की 13 भाषाओं में इंजीनियरिंग का पाठ्यक्रम तैयार करने का काम जारी है। उन्होंने भरोसा जताया कि आने वाले दिनों में हिंदी अनुसंधान की भी भाषा होगी। राजभाषा की हीरक जयंती के अवसर पर अमित शाह ने स्मारक डाक टिकट और स्मारक सिक्के का भी लोकार्पण किया। इस अवसर उन्होंने राजभाषा गौरव और राजभाषा कीर्ति पुरस्कार भी प्रदान किये।

आइपीएस अधिकारी अमृत मोहन प्रसाद बनाए गए एसएसबी प्रमुख, पहले भी निभा चुके हैं देश के लिए अहम जिम्मेदारी

वरिष्ठ आइपीएस अधिकारी अमृत मोहन प्रसाद को शुक्रवार को सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) का महानिदेशक नियुक्त किया गया। अमृत मोहन प्रसाद वर्तमान में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के विशेष महानिदेशक हैं। कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने एसएसबी के महानिदेशक के पद पर प्रसाद की नियुक्ति को मंजूरी दे दी है। उनका कार्यकाल 31 अगस्त 2025 तक होगा जिस दिन वह सेवानिवृत्त होंगे।

नई दिल्ली। वरिष्ठ आइपीएस अधिकारी अमृत मोहन प्रसाद को शुक्रवार को सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) का महानिदेशक नियुक्त किया गया। ओडिशा कैडर के 1989 बैच के आइपीएस अधिकारी अमृत मोहन प्रसाद वर्तमान में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के विशेष महानिदेशक हैं।

कार्मिक मंत्रालय द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने एसएसबी के महानिदेशक के पद पर प्रसाद की नियुक्ति को मंजूरी दे दी है। उनका कार्यकाल 31 अगस्त, 2025 तक होगा, जिस दिन वह सेवानिवृत्त होंगे।

नेपाल और भूटान के साथ देश की सीमाओं की रक्षा करता है। एसएसबी प्रमुख दलजीत सिंह चौधरी को 28 अगस्त को सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) का महानिदेशक नियुक्त किए जाने के बाद यह पद खाली हुआ था।

'किसके आदेश पर ऐसा किया गया?' भारतीय पत्रकार के साथ कथित मारपीट को लेकर राहुल गांधी से बीजेपी के सवाल

परिवहन विशेष न्यूज

भाजपा सांसद एवं पार्टी प्रवक्ता सुधाशु त्रिवेदी ने कहा राहुल गांधी की अमेरिका यात्रा के दौरान एक पत्रकार पर हमला किया गया उसका फोन जब्त कर लिया गया। यह कांग्रेस की असली मानसिकता को बयां करता है। राहुल गांधी हर संसदीय सत्र के बाद विदेश यात्रा करते हैं भारत विरोधी बयान देते हैं और भारत विरोधी एजेंडे वाले व्यक्तियों से मिलते हैं।

नई दिल्ली। भाजपा ने अमेरिका में कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा एक भारतीय पत्रकार के साथ मारपीट और दुर्व्यवहार की घटना को लेकर शनिवार को राहुल गांधी पर निशाना साधा। कहा-यह घटना कांग्रेस नेता के अमेरिका दौरे के दौरान हुई। राहुल बताएं कि ऐसा किसके आदेश पर किया गया? साथ ही कहा कि पत्रकार से दुर्व्यवहार की घटना कांग्रेस की असली मानसिकता को दर्शाती है।

भाजपा सांसद एवं पार्टी प्रवक्ता सुधाशु त्रिवेदी ने कहा, ₹राहुल गांधी की अमेरिका यात्रा के दौरान एक पत्रकार पर हमला किया गया, उसका फोन जब्त कर लिया गया और उसके द्वारा लिया गया साक्षात्कार जबरन हटा दिया गया। यह कांग्रेस की असली मानसिकता को बयां करता है। राहुल गांधी हर संसदीय सत्र के बाद विदेश यात्रा करते हैं, भारत विरोधी बयान देते हैं और भारत विरोधी एजेंडे वाले व्यक्तियों से मिलते हैं।₹

एक सवाल से आप क्यों भड़क गए: राहुल गांधी

भाजपा नेता ने अमेरिका में हाल ही में एक कार्यक्रम के दौरान मीडिया में जातिवाद के बारे में गांधी की टिप्पणी की भी कड़ी निंदा की। उन्होंने कहा, "वह भारतीय पत्रकारों का मनोबल गिराने के लिए मीडिया में जातिवाद की बात करते हैं और फिर उनकी टीम अमेरिका में उन पर हमला करती है। मैं राहुल से पूछना चाहता हूं.. किसके आदेश पर ऐसा किया गया? बांग्लादेशी हिंदुओं से संबंधित एक सवाल से आप क्यों भड़क गए?"

देश के खिलाफ बोलने के लिए राहुल को सबक सिखाएंगे: अठावले

पीटीआई के अनुसार केंद्रीय सामाजिक न्याय मंत्री रामदास अठावले ने शनिवार को कहा कि राहुल गांधी का आरक्षण समाप्त करने संबंधी बयान निंदनीय है और उनकी पार्टी महाराष्ट्र तथा अन्य जगहों पर कांग्रेस नेता के खिलाफ विरोध प्रदर्शन तेज करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि दलित लोग विदेशी धरती पर देश के खिलाफ बोलने के लिए राहुल गांधी को सबक सिखाएंगे। उन्होंने लोकसभा में विपक्ष के नेता से माफी मांगने की मांग भी की।

पीएम मोदी के घर आया बेहद खास मेहमान, नाम रखा दीपज्योति

परिवहन विशेष न्यूज

पीएम मोदी के आवास में गाय के बछड़े का आगमन हुआ है। उन्होंने इस बछड़े का नाम दीपज्योति रखा है। पीएम मोदी ने एक वीडियो शेयर किया है जिसमें वो बछड़े को दुलार करते नजर आ रहे हैं। बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी के आवास पर बेहद खास ब्रीड (पुंहनुर ब्रीड) की गाय है।

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पशु प्रेम जगजाहिर है। पीएम मोदी के आवास पर पुंगनुर ब्रीड की गाय सहित कई पालतू जानवर मौजूद हैं। इसी बीच पीएम नरेंद्र मोदी ने एक्श हैंडल पर एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें वो एक गाय के बच्चे (बछड़ा) के साथ दिख रहे हैं।

वीडियो में पीएम मोदी अपने घर में गाय के बछड़े को दुलार करते दिख रहे हैं। प्रधानमंत्री ने जानकारी दी कि नव वत्सा का नाम 'दीपज्योति' रखा गया है।

पीएम मोदी ने नाम रखा 'दीपज्योति'

प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स हैंडल पर लिखा, हमारे शास्त्रों में कहा गया है - गावः सर्वसुख प्रदाः'। लोक कल्याण मार्ग पर प्रधानमंत्री आवास परिवार में एक नए सदस्य का शुभ आगमन हुआ है। प्रधानमंत्री आवास में प्रिय गौ माता ने एक नव वत्सा को जन्म दिया है, जिसके मस्तक पर ज्योति का चिह्न है। इसलिए, मैंने इसका नाम 'दीपज्योति' रखा है।'

पीएम आवास में मौजूद है पुंहनुर ब्रीड की गाय

इससे पहले मकर संक्रांति के मौके पर पीएम मोदी अपने आवास में गौसेवा करते नजर आए थे। प्रधानमंत्री के आवास पर बेहद खास ब्रीड (पुंहनुर ब्रीड) की गाय है। यह दुनिया के सबसे छोटी नस्ल की गाय है। इस गाय का दूध काफी पौष्टिक माना जाता है।

अंग्रेज अफसर के नाम पर क्यों रखा गया पोर्ट ब्लेयर का नाम? पढ़ें कौन थे आर्चीबाल्ड ब्लेयर

पोर्ट ब्लेयर का नाम आर्चीबाल्ड ब्लेयर (Archibald Blair) के नाम पर रखा गया था। वो ईस्ट इंडिया कंपनी के नौसेना अधिकारी थे। आर्चीबाल्ड ब्लेयर की देखरेख में पोर्ट ब्लेयर को तैयार किया गया था। इस द्वीप को ब्रिटिश मैरिटाइम नेटवर्क का सेंटर बनाया गया। प्रशासनिक और व्यापारिक गतिविधियों पर पोर्ट ब्लेयर से ही नजर रखी जाती थीं।

नई दिल्ली। पोर्ट ब्लेयर (Port Blair) का नाम बदलकर श्री विजयपुरम (Sri vijayapuram) कर दिया गया है। औपनिवेशिक छाप से मुक्त कराने के लिए मोदी सरकार ने पोर्ट ब्लेयर का नाम बदलने का फैसला किया है। आइए जानते हैं कि पोर्ट ब्लेयर का इतिहास क्या है और इस द्वीप का नाम पोर्ट ब्लेयर क्यों पड़ा।

दरअसल, पोर्ट ब्लेयर का नाम आर्चीबाल्ड ब्लेयर (Archibald Blair) के नाम पर रखा गया था। वो ईस्ट इंडिया कंपनी के नौसेना अधिकारी थे। उन्होंने 1789 में चागोस द्वीपसमूह और अंडमान द्वीपसमूह का सर्वेक्षण किया था। इसी वजह से उनके नाम पर ही पोर्ट ब्लेयर द्वीप का नाम रखा गया था।

अंग्रेजों के लिए सबसे महत्वपूर्ण द्वीप था पोर्ट ब्लेयर

आर्चीबाल्ड ब्लेयर की देखरेख में पोर्ट ब्लेयर का कायाकल्प किया गया। इस द्वीप को ब्रिटिश मैरिटाइम नेटवर्क का सेंटर बनाया गया। प्रशासनिक और व्यापारिक गतिविधियों पर पोर्ट ब्लेयर से ही नजर रखी जाती थीं।

एक जमाने में पोर्ट ब्लेयर शहर फिशिंग का हब हुआ करता था। औपनिवेशिक शासन के दौरान अंडमान निकोबार द्वीपसमूह से सुदूर इलाकों पर नजर रखा जाता था। पूर्व बंगाल की खाड़ी पर वर्चस्व बनाने के लिए पोर्ट ब्लेयर को कब्जे में लेना अंग्रेजों के लिए जरूरी था।

इस द्वीप का इतिहास

पोर्ट ब्लेयर में ही सेलुलर जेल मौजूद है, जहां ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेजों ने देश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर जुल्म ढाए। इस जेल में काला पानी की सजा भी दी जाती थी। जेल पोर्ट ब्लेयर शहर में अटलांटा प्वाइंट पर स्थित है। इस पोर्ट पर एशिया की सबसे पुरानी और सबसे बड़ा आरा मिल है, जिसे चाथम आरा मिल कहा जाता है।

अमित शाह ने नाम बदलने के पीछे क्या है मकसद?

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि 'श्री विजयपुरम' नाम हमारे स्वाधीनता के संघर्ष और इसमें अंडमान और निकोबार के योगदान को दर्शाता है।

शुक्रवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर किए पोस्ट में कहा कि देश को गुलामी के सभी प्रतीकों से मुक्ति दिलाने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संकल्प से प्रेरित होकर गृह मंत्रालय ने पोर्ट ब्लेयर का नाम 'श्री विजयपुरम' करने का फैसला लिया है। इस भारतीय द्वीप का हमारे देश की स्वाधीनता और इतिहास में अद्वितीय स्थान रहा है।

अमित शाह ने आगे कहा, "चोल साम्राज्य में नौसेना अड्डे की भूमिका अदा करने वाला यह द्वीप आज देश की सुरक्षा और विकास को गति देने के लिए तैयार है। यह द्वीप नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी द्वारा सबसे पहले तिरंगा फहराने से लेकर सेलुलर जेल में वीर सावरकर व अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के द्वारा मां भारती की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का स्थान भी है।"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023